ऐसे थे सद्गुरु हमारे

युगपुरुष मौनी बाबा
परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी
महर्षि मेंही दासजी

बटेश महाराज

बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी
पटना

ऐसे थे सद्गुरु हमारे

युगपुरुष मौनी बाबा
परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी
महर्षि मेंही दास जी

लेखक
बटेश महाराज

बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी
पटना

© बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना

बिहार विभूति ग्रंथमाला के अन्तर्गत बिहार की तीन सांस्कृतिक विभूतियों पर भारत सरकार के प्रकाशन-अनुदान से बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित।

प्रकाशित ग्रंथ संख्या : 484

प्रथम संस्करण : 24 अक्टूबर 2001

मूल्य : रु० रु० 75=00 (पचहत्तर रुपये मात्र)

संगणकीय अक्षरांकन : एस. सी. ग्राफिक्स
बहादुरपुर, पटना

आवरण एवं साज-सज्जा : श्रीमती सीमा गुप्ता

मुद्रक : विजयश्री ऑफसेट प्रिंटर्स, न्यू बहादुरपुर, पटना

प्रकाशक :
बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी
प्रेमचंद मार्ग, राजेन्द्रनगर
पटना-800 016

इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए मेरी बधाई !

रामलषण राम 'रमण'
माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा मंत्री
बिहार सरकार
एवं
अध्यक्ष, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना

प्रकाशकीय

'कीरति भनिति भूति भलि सोई । सुरसरिसम सब कहँ हित होहि ।'

भक्तिकालीन साहित्य के मर्मज्ञ, भारतविद्या के अनुपम हस्ताक्षर, माँ कामाख्या के संतमन साधक श्री बटेश महाराज के समक्ष लेखन में यही आदर्श है कि उनकी वाणी जन-जन का कल्याण करे । भक्तिकाल में इस आदर्श को हमारे कवियों ने मार्मिक ढंग से रखा है । तुलसी ने प्राकृत जनों का गुणगान करने वाले कवियों को धिक्कारा है ।

बटेश महाराज ने जिन तीन सद्गुरुओं को अपने आदर्श के रूप में रखा है, उनका उद्देश्य अपने समय के जर्जर जीवन में जीवनी-शक्ति फूँक कर उसे विकास के सर्वांगीण प्रगति-पथ पर अग्रसर करना है । ये सद्गुरु समाज की टूटी हुई व्यवस्था को समाप्त करके उसे मानवता के आधार पर निर्मित करना चाहते थे । उनकी दृष्टि में गहराई तो है ही, हम यह भी कह सकते हैं कि उनकी साधना और रचना में इतनी सहृदयता और संवेदनशीलता है कि उनसे परिचित होने पर जन-जन आलोड़ित हो जाता है ।

भारत में गुरु परंपरा का बहुत महत्त्व है । संतों और नाथों के पूर्ववर्ती सिद्धों ने गुरु को अधिक महत्त्व दिया था । यह प्रवृत्ति बौद्ध धर्म में पहले नहीं थी । एक बार बुद्ध से किसी ने पूछा कि उनका गुरु कौन है ? उनका उत्तर था कि उन्होंने अपने अभिज्ञान से सब प्राप्त किया, उनका गुरु कौन है ? किन्तु, 'गुह्य समाजतंत्र' में प्रत्येक तथागत का गुरु एक बज्राचार्य बताया गया है, जिसकी पूजा वे स्वतः करते हैं । इसी सिद्धान्त के अनुसार सिद्धों ने गुरु की महिमा का गान किया है । तिल्लोपा कहते हैं कि समस्त लोक तथा पंडितों के लिए भी जो अगम्य है, पर श्रीगुरुपाद के प्रसन्न होने पर कौन ऐसी वस्तु है, जो अगम रह जाय (दोहाकोषः तिल्लोपा) । अद्वयवज्र के 'प्रेम पंचक' में गुरु को दूती कहा गया है । गुरु प्रज्ञा तथा उपाय की मध्यस्थता कर दोनों का मिलन संपन्न करा देता है ।

नाथों और संतों में यह प्रवृत्ति बराबर चली आयी है, किन्तु नाथों और संतों के गुरु में एक अंतर है । नाथों का गुरु योग साधना का ज्ञाता है, संतों का गुरु वैष्णव प्रतीत होता है और वह शब्द-सुरति के साथ हरिभक्ति और प्रेम साधना का भी उपदेश देता है । नाथपंथी बानियों में भी कई स्थलों पर ऐसा दिखता हे

कि शिष्य गारेखनाथ अपने गुरु मच्छीन्द्रनाथ को उपदेश दे रहे हैं; पर यह संभवत: उस घटना की स्मृति है, जिसमें किंवदन्तियों के अनुसार कहा जाता है कि गोरख ने योगिनियों के जाल से मछीन्द्र को मुक्त कराकर तान्त्रिक अनुष्ठानों का बहिष्कार किया था।

धर्मवीर भारती ने अपनी पुस्तक 'सिद्ध साहित्य' में यह लिखा है कि सभी पद्धतियों में यह मान्यता है कि जो निगुरा है या गुरुहीन है, उसे ब्रह्म की उपलब्धि नहीं हो सकती, पर साथ ही साथ यह चेतावनी भी दी है कि अज्ञानी शिष्य को यदि अज्ञानी गुरु मिल गया तो वे दोनों विनष्ट हो जाते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के वर्ण्य विषय को दार्शनिक एवं आध्यात्मिक ही मानेंगे। उनमें परमात्मा तत्त्व की चर्चा है, जिसमें उसके वस्तुत: अज्ञेय तथा अनिवर्चनीय स्वरूप का यथासाध्य परिचय कराया गया है और उसके साथ जगत एवं जीवन के वास्तविक संबंध का वर्णन भी है। पुस्तक का उद्देश्य सांसारिक प्रपंच में पड़े हुए लोगों को अपने मतानुसार, सच्चे मार्ग का परिचय कराना है।

जिन सद्गुरुओं के बारे में इस पुस्तक में लिखा गया है, उनके बारे में दिनकर के शब्दों में यह कह सकते हैं कि बुद्धि जिसे लाख कोशिश करने पर भी नहीं समझ पाती, लेखक का हृदय उसे अचानक देख लेता है। विद्या समुद्र की सतह पर उठती हुई तरंगों का नाम है। किन्तु, अनुभूति समुद्र की अन्तरात्मा में बसती है। अनुभूति का एक कण कई टन ज्ञान से अधिक मूल्यवान है।

निश्चय ही ये सद्गुरु अनुभूतियों के आगार थे और उनके जीवन को देखकर, यही स्पष्ट होता है कि जिन्हें अनुभूति प्राप्त हो जाती है, ज्ञान का द्वार उनके सामने स्वयं खुल जाता है तथा सारी विद्याएँ उन्हें स्वयं और सहज रूप में उपलब्ध हो जाती है। यही राय तो दिनकर की भी स्वामी रामकृष्ण परमहंस के बारे में थी।

आखिर ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता क्यों है ? इस संबंध में मैं दिनकर को ही उद्धृत करना चाहूँगा जिन्होंने 'संस्कृति के चार अध्याय' में एक पश्चिमी विचारक[1] को समाने रखकर कहा कि यह ठीक है कि ईश्वर की परिभाषाएँ लुप्त होती जा रही हैं; मूर्त्तियाँ डगमगा रही हैं और प्रतीक टूटकर बिखरते जा रहे हैं, किन्तु, तब भी मनुष्य का अगोचर अस्तित्व बराबर उभरना चाहता है। वह बराबर किसी अतल गहराई में से बाहर आने को बेचैन है। मेरी नजर में यह पुस्तक उसी बेचैनी का प्रमाण है।

---

1. O. B. Frothingam

एक विचारक[1] ने कहा कि तीन कारणों से मैं नास्तिक नहीं हूँ। पहला कारण यह है कि जीवन के प्रति नास्तिक का सिद्धान्त अर्नुवर और रूढ़िग्रस्त है। दूसरा कारण यह है कि जीवन के प्रति नास्तिकों का दृष्टिकोण पूर्णतः नकारात्मक है। तीसरा कारण यह है कि नास्तिकता किसी भी मर्म का उद्घाटन नहीं कर सकती। सृष्टि का तकाजा यह है कि इसके रहस्यों का उद्घाटन किया जाय।

दिनकर लिखते हैं कि सृष्टि के रहस्य बुद्धि से उद्घाटित नहीं होते। इसके लिये एक विचित्र प्रकार की शक्ति अपेक्षित होती है, जो पंडितों के पास नहीं, संतों के पास होती है। सहजानुभूति ज्ञान से अधिक शक्तिशाली वस्तु है। विज्ञान ने सृष्टि के रो-रोम में प्रवेश करके यह बता दिया है कि अब कहीं भी कोई तत्त्व अविश्लिष्ट नहीं है। फिर भी, एमर्सन की इस अनुभूति की गूंज हमारे कानों में है कि प्रकृति का पर्दा अत्यन्त झीना और महीन है। सर्वत्र विद्यमान प्रभु की सत्ता इस पर्दे के तार-तार से झाँक रही है। प्रकृति के केन्द्र में एक आत्मा बसती है; मनुष्य की इच्छा के ऊपर एक देवता का वास है। आत्मा के प्रत्येक कार्य में ईश्वर और मनुष्य का मिलन हो रहा है।

इस मिलन में जो सहायक है, वही गुरु है। पुस्तक में वर्णित इन सद्गुरुओं के प्रति मैं अपनी प्रणति निवेदित करता हूँ और लेखक के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में अक्षरांकण का कार्य एस. जी. ग्राफिक्स, बहादुरपुर, पटना की श्रीमती सीमा गुप्ता ने किया है और मुद्रण का कार्य विजयश्री ऑफसेट, बहादुरपुर, पटना के स्वत्वाधिकारी श्री विजय कुमार गुप्ता द्वारा संपन्न किया गया है। मैं इन्हें धन्यवाद देता हूँ।

इस पुस्तक के प्रकाशन में जिनका प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग मिला है, उन्हें भी मैं धन्यवाद देता हूँ।

आशा है, पाठकों द्वारा इस पुस्तक का व्यापक स्वागत होगा।

अमर कुमार सिंह

बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी
राजेन्द्रनगर, पटना-16
दिनांक–24 अक्टूबर, 2001

अमर कुमार सिंह
निदेशक

---

1. J. H. Holmes

समर्पण

–माँ कामाख्या के कर कमलों में

अन्तर्वीणा के बिखरे तारों को
दिव्यात्मा मौनी बाबा की पावन-पुण्य-स्मृति में
समेट कर श्रद्धा और विश्वास का संबल ले,
प्राची के दूर क्षितिज पर.....
गुनगुनाने का जो साहस मैंने किया है–
अर्पित है उस महाशक्ति को,
जिसने वरदान दिया है !!

–बटेश महाराज

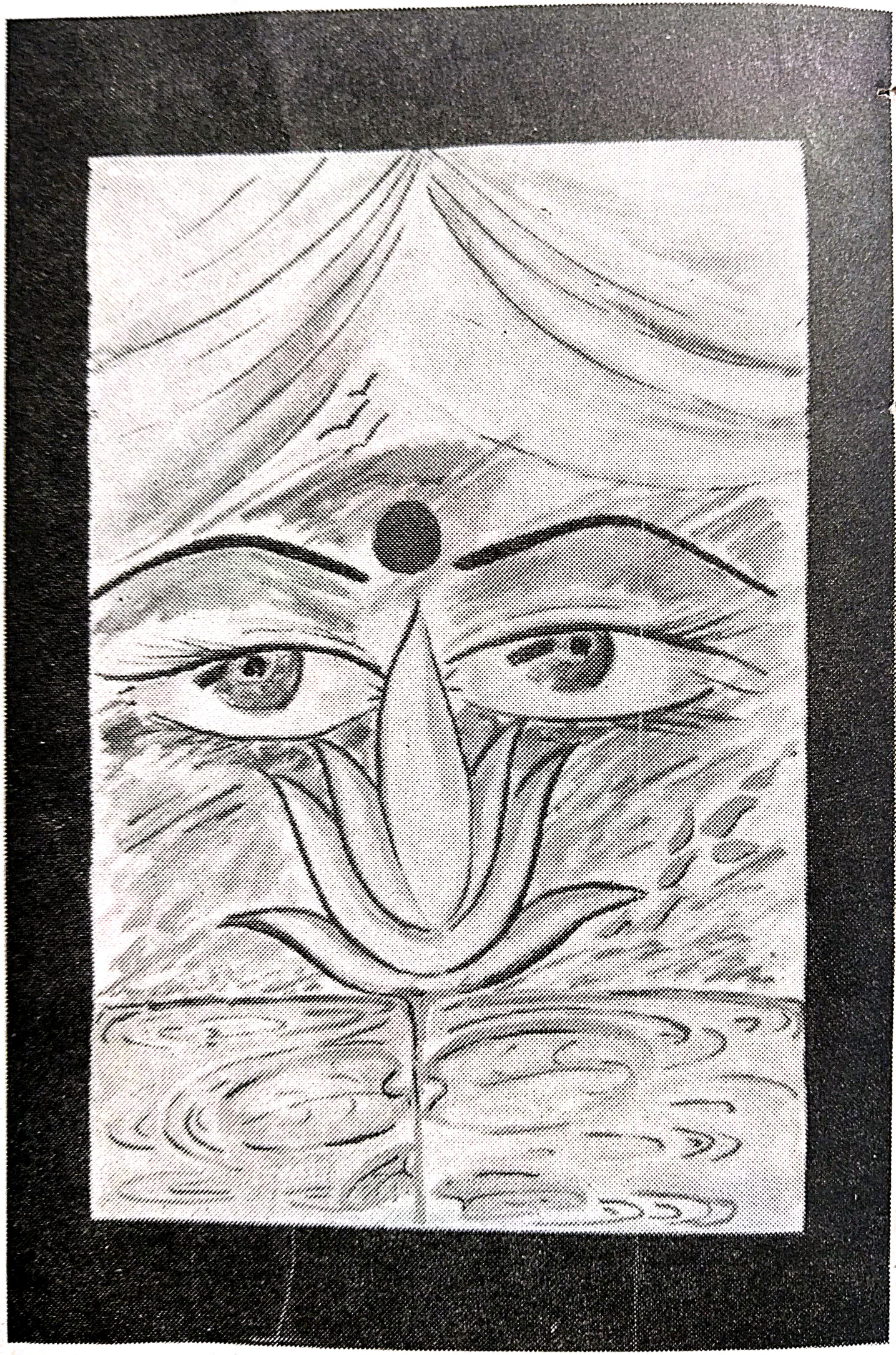

विषय-क्रम

क्रम सं०	लेख		पृष्ठ
1.	अपनी कलम से	....	3-5
2.	जीवन गाथा	....	6-9
3.	आस्था	....	10-12
4.	मान्यता	....	13-17
5.	देश प्रेमी बाबा	....	18-21
6.	कुटी का महत्त्व	....	22-23
7.	शिव भक्त	....	24-25
8.	मिथिला और मौनी बाबा	....	26-28
9.	भक्तों की डायरी से	....	29-32
10.	रहस्योद्घाटन	....	33
11.	लेखक और बाबा	....	33-34
12.	कुटी की डायरी	....	35-39
13.	अर्न्तयामी बबा	....	40-42
14.	लेखक की अपनी अनुभूतियाँ	....	43-45
15.	पूजा और पुजारी	....	46-49
16.	कुटी का क्षेत्रीय भूमंडल	....	50-53
17.	परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी	....	57-65
18.	महर्षि मेंही दास जी	....	69-75

◆◆◆

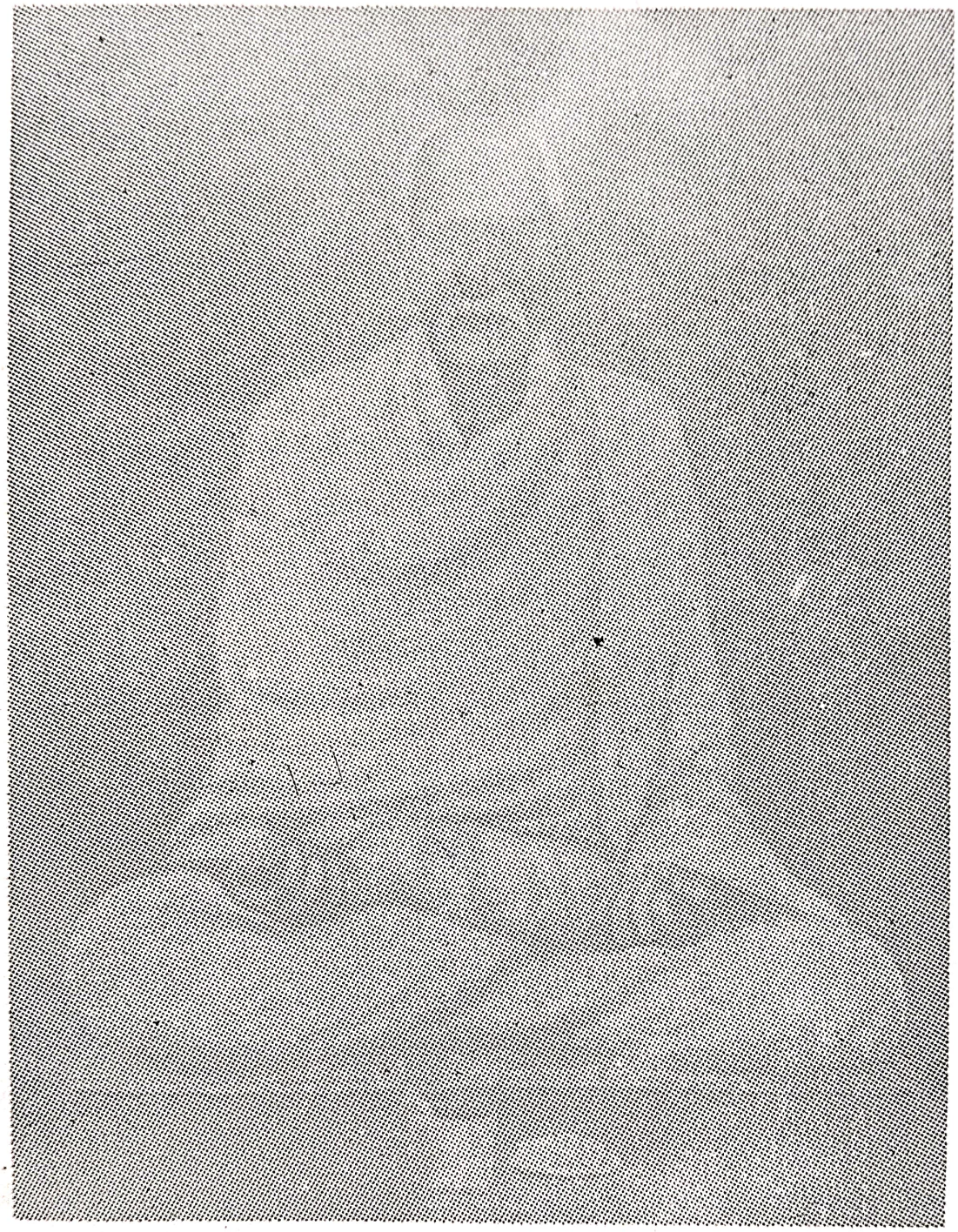

मौनी बाबा, कहरा कुटी

(बटेश महाराज के सौजन्य से)

अपनी कलम से.....

साहित्य और अध्यात्म में मेरी आस्था और निष्ठा सदैव से रही है। इसमें मेरा संस्कार है। पूजन-अर्चन ही जीवन की एकमात्र निधि रही है। माननीय बाबा की चरण सेवा में ही मेरा परिवार सतत् समर्पित रहा और उनकी असीम कृपा ही इस पुस्तक की देन है।

वर्षों पहले इस पुस्तक की रचना हुई लेकिन कतिपय व्यवधानों के बीच संघर्ष करता रहा, प्रकाशन नहीं हो पाया। इस पर गहरा चिन्तन किया गया और बाबा के अनन्य भक्त अवधनारायण सिंह की वाणी मानस पर आती रही। एक बार पुस्तक लिखने की जिज्ञासा से अवध बाबू से मिला—उस समय अवध बाबू जीवित थे, मेरे ऊपर उनका बहुत बड़ा स्नेह था। जब कभी गाँव जाता मैं विष्णुपुर जाकर उनका दर्शन अवश्य करता। एक बार आपने कहा कि बाबा जब जीवित थे उस समय कई लेखक आये—युगल राम 'प्रेम,' सत्यनारायण पोद्दार (मधेपुरा) एवं गीता प्रेस के विद्वद्जन, उन लोगों ने पुस्तक लिखने की जिज्ञासा की थी लेकिन कृपालु बाबा ने अपनी स्वीकृति नहीं दी थी।

दूसरी ओर एक और घटना सामने आ गयी। मेरे अभिन्न मित्र सूर्यकांत शर्मा 'विमल' जो जगजीवन राम श्रमिक महाविद्यालय जमालपुर (मुंगेर) में हिन्दी के प्राध्यापक रहे—बाबा के सम्बन्ध में एक पांडुलिपि तैयार की थी लेकिन संयोगवश 1954 में एक अग्निकांड में जैसा कि आपने कहा कि अर्जित निधि समाप्त हो गयी। यह द्वन्द्व मेरे अन्तर्मन को उद्वेलित करता रहा। बाद में अवध बाबू की ही प्रेरणा से ही इस कार्य में लगा रहा। अवध बाबू ने कहा कि मौनी बाबा बीतरागी रहे। वे अपना नाम नहीं चाहते थे हाँ समाज की सेवा चाहते थे, कल्याण चाहते थे। विद्यालय का निर्माण समाज के हित में हुआ। आप समाज के लिये ही उनका चरित्र सामने रखें जो जनोपयोगी हो। समाज को एक मार्ग दर्शन मिले। यह पुनीत कार्य है।

1954 से 1961 तक मैं सियाराम विद्यालय जगबनी, थाना सिंहेश्वर जिला सहरसा में अध्यापक रहा। विद्यालय की स्थापना बाबा के परम भक्त सियाराम ने की थी। आठ साल की लम्बी अवधि में सियाराम मंडल जी ने जो चालीस वर्षों से अन्न का परित्याग किये हुए थे बाबा के सान्निध्य में देखने और समझने की जानकारी दी। जगबनी क्षेत्र के अनेक भक्तों ने भी बाबा के चमत्कारों का

वर्णन किया। उस समय मेरी प्रबल इच्छा हुई बाबा के ऊपर एक पुस्तक लिखी जाय लेकिन आर्थिक विपन्नता के कारण सफलता नहीं मिली।

बाबा की मृत्यु के समय मेरी उम्र नौ वर्ष की थी। ज्ञान और विवेक की कमी के कारण बाबा को अधिक नहीं जान सका। सिर्फ मुँह की आकृति, विस्तृत ललाट और आँखों में अद्‌भुत आकर्षण आज भी याद है। कालान्तर से समय-समय पर जानकारी हासिल करता रहा। पुस्तक प्रणयन में जिन भक्तों का मैंने साक्षात्कार किया—नाम नीचे दिये जा रहे हैं। आपने अपना बहुमूल्य समय देकर प्रसन्नता के साथ बाबा के दिव्य रूप का दिग्दर्शन कराया। अभाग्यवश एक भी सज्जन इस संसार में नहीं रहे।

1. पं० चिरंजीव झा, ग्राम—मदनपुर कहरा, जिला—मधेपुरा।
2. सियाराम मंडल, ग्राम—जगबनी, थाना—सिंहेश्वर, मधेपुरा।
3. लोकसभा सदस्य अनूप लाल मेहता, बनमनखी, पूर्णियाँ।
4. प्रथम न्यायमंत्री, बिहार सरकार शिवनन्दन मंडल ग्राम—रानीपट्टी (मधेपुरा)
5. मुख्यमंत्री, बिहार रहे बिन्देश्वरी प्रसाद मंडल, मुरहो (मधेपुरा)।
6. शास्त्री कमलाकांत, ग्राम—कहरा (सहरसा)।
7. महान हठयोगी सरकार अर्जुन दास, धबौली कुटी (सहरसा)।
8. प्रधानाध्यापक गोवर्द्धन प्रसाद सिंह, धबौली, (सहरसा)।
9. स्वतंत्रता सेनानी अवध नारायण सिंह विष्णुपुर, (सहरसा)।
10. जिलाधिकारी प्रभाकर झा, आई० ए० एस० बिशौनी (खगड़िया)।
11. ताराकांत झा, कहरा (सहरसा)।
12. युगल राम 'प्रेम' प्रेम निवास, मधेपुरा, जिला—सहरसा।
13. माननीय नागाबाबा, अस्सी संगम, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)
14. महामहोपाध्याय पं० सिद्धनाथ शर्मा, वाराणसी, (उत्तर प्रदेश)

पुस्तक में क्रमगत इन लोगों के द्वारा बाबा के जो अद्‌भुत चमत्कार सामने आये हैं, संक्षिप्त में उल्लेख किया गया है। भविष्य में अगर आपका सहयोग रहा तो विशिष्ट संस्करण में सारी बातों की चर्चा आ जायगी।

चिन्तन और अनुचिन्तन के मानस पर बाबा का पावन-चरित्र अनुकरणीय एवं प्रातः स्मरणीय है। भक्तों के द्वारा प्रदत्त जानकारी के आधार पर व्यक्तिगत गहरे शोध से जो बातें लिखी गयी हैं, अक्षरशः सत्य है।

दिव्यात्मा मौनी बाबा इस असार संसार को छोड़कर चले गये—ऐसी बात नहीं है—वे अब भी हमारे बीच रहकर सच्चे मार्ग पर चलने के लिये प्रेरित कर रहे हैं। बाबा के रहस्यमय चरित्र का अध्ययन अगर आप पवित्र दिल से करें तो आपकी मन: कामनाएँ पूर्ण होगी, शांति मिलेगी। पुस्तक की भाषा सरल और सुगम है ताकि सर्वसाधारण को समझ में आ जाय।

मौनी बाबा के साथ ही पुस्तक में परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी एवं महर्षि मेंही दास जी के व्यक्तित्व और अलौकिक चरित्र का स्मरण किया गया है जो वंदनीय है। इन सद्गुरुओं का मार्गदर्शन ले सद्पथ पर चलने का संकल्प होना चाहिए।

और अन्त में साधक समाज के सभी सदस्यों को धन्यवाद देते हैं जिनका हार्दिक सहयोग युग पुरुष मौनी बाबा के प्रकाशन में प्राप्त हुआ है।

◆◆◆

जीवन गाथा

–माननीय मौनी बाबा का जन्म 16 फरवरी, 1863 ई० में ग्राम कहरा थाना मधेपुरा, जिला भागलपुर के मध्यम वर्गीय किसान परिवार में हुआ। बाबा के जन्म के समय सहरसा जिला नहीं था। 1953 ई० में भागलपुर का उत्तरी हिस्सा सहरसा के नाम से बना। आप पढ़ने के समय सहरसा के बजाय भागलपुर की ही स्मृति रखेंगे। बाबा का जन्म उत्तरी भागलपुर में हुआ और मृत्युपर्यन्त उत्तरी भागलपुर ही रहे। बचपन का नाम मनमोहन मिश्र एवं पिता पं० बुलाकी मिश्र थे। जगमोहन मिश्र एवं अनिरुद्ध मिश्र आपके सगे भाई थे। जिनकी संतान आज भी ग्राम कहरा थाना सौर बाजार जिला सहरसा में हैं और काफी सुसंस्कृत हैं।

–बचपन से ही आपकी बुद्धि तीव्र थी। दस वर्ष की अवस्था में संस्कृत का एवं खासकर ज्योतिषशास्त्र का अध्ययन करने के लिये ग्राम बलवा जिला सहरसा में पं० नब्बू मिश्रजी के यहाँ गये। प्रारम्भिक पढ़ाई समाप्त करने के बाद आप संस्कृत विद्यालय सिहौल जिला सहरसा आये। दो वर्षों तक आपने उक्त विद्यालय में शिक्षा प्राप्त की। तदुपरान्त ज्योतिष एवं वेदान्त की विशिष्ठ शिक्षा हेतु 1879 ई० में काशी नगरी चले आये। आपके गुरु काशी के प्रसिद्ध ज्योतिषी एवं वेदान्त के मानस मार्त्तण्ड पं० पुरुषोत्तम जी शर्मा थे। आपने काशी नगरी में अपने विषयों का गहरा अध्ययन किया। बाबा विश्वनाथ में आपकी आस्था और प्रगाढ़ भक्ति थी। आपने गीता के परममतत्व का वास्तविक ज्ञान काशी प्रवास में पाया। समकालीन काशी के पंडितों में आपकी विद्वता का गुणगान रहा।

–परमतत्त्व की प्राप्ति के बाद आपके हृदय में विरक्ति आयी और कहा जाता है कि काशी प्रवास के समय आपके चचेरे भाई पं० शंभुनाथ मिश्रजी की मृत्यु काशी में ही हुई। उनके अन्तिम श्राद्ध के दिन आपका मन इस संसार से उचट गया और एक रात मोह और ममत्व का परित्याग कर गोरखपुर चले आये। कहा जाता है कि गुरु गोरखनाथ के परम शिष्य संन्यासी बाबा से आपने योग की शिक्षा ली, यह घटना लगभग 1883 ई० की है। इस सन्दर्भ में साक्षात्कार के क्रम में काशी के पं० सिद्धनाथ शर्मा, जिनकी आयु लगभग 93 साल की थी, ने बताया कि गुरु गोरखनाथ ने अपना साक्षात् दर्शन मौनी को दिया था। आगे हम इसकी विशेष चर्चा करेंगे। योग शिक्षा के क्रम में आप अपना समय गोरखपुर की पहाड़ी पर बिताने लगे।

–कालान्तर में आपके बड़े चचेरे भाई पं० लक्ष्मीनाथ मिश्र जी भ्रातृत्व प्रेम के वशीभूत होकर खोजते-खोजते गोरखपुर की पहाड़ी पर आये और आपसे गाँव चलने का आग्रह किया लेकिन आपका ध्यान इस ओर नहीं गया। बड़े भाई ने अपना अधिकार और प्रेम जताया। कहा जाता है कि आप चलने को तैयार हुए लेकिन बड़े भाई से प्रण करबा लिया कि मुझे सांसारिक बंधनों से दूर रखा जाय और भाई ने ऐसा आश्वासन भी दिया। पं० लक्ष्मीनाथ मिश्र जी ने गोरखपुर की पहाड़ी पर आपके विशिष्ठ रूप का दर्शन किया। आप अपने बड़े भाई के साथ अपनी जन्मभूमि वापिस आये।

–लगभग 1901 में पं० लक्ष्मीनाथ मिश्रजी ने आपकी साधना के लिये निर्जन स्थान में आपके मन के मुताविक कुटी का निर्माण कहरा में किया। कुटी का नक्शा 1903-1904 के सर्वे में आ गया है। इससे साबित होता है कि 1903 के पहले ही कुटी तैयार हो गयी थी। आपने लगभग 1901 से कहरा कुटी को ही अपना साधना-स्थल बनाया। कहने का तात्पर्य समाज में रहकर भी समाज में नहीं रहना लेकिन परोपकार करना आपकी दैनिक परिचर्या रही। साल में कुछ दिनों के लिये भारत भ्रमण भी करते रहे।

–आप 1901 से ही खादी वस्त्र का उपयोग करते थे। समकालीन अवधि में अंगरेजों का बोलबाला था। स्वदेशी वस्त्रों का व्यवहार करना जुर्म माना जाता था लेकिन आपके हृदय में डर और भय नाम की कोई चीज नहीं थी। सुबह चार बजे से ही अपने नित्यकर्म से निवृत हो प्राणायाम किया करते थे। आपको मालूम होना चाहिये कि दंतधावन के लिये सबा हाथ (बड़ का सिर) का दंतवन करते थे और अपने पेट को भी इसी मुलायम लकड़ी के सहारे प्रतिदिन साफ करते थे। यदा-कदा यौगिक क्रिया द्वारा पेट की अंतड़ियाँ बाहर कर लेते थे और पुनः साफ कर यथावत रख दिया करते थे। प्राणायाम के समय आपका आसन पृथ्वी को छोड़कर शून्य में आ जाता था। इस सम्बन्ध में बाबा के परम भक्त श्री अवधनारायण सिंह जी ने बताया कि मैंने कई बार बाबा के आसन को शून्य में स्थित देखा है। लगभग 1910 से 1922 के बीच कई बार आपने भारत का परिभ्रमण किया और इस सन्दर्भ में योगाभ्यासी साधुओं की भी सत्संगति हुई और यही कारण था कि कुटी पर योग विद्या की सिद्धि के लिये साधु-संतों का आगमन होता रहता था। आप योग विद्या के गुरु माने जाते थे। आपके दर्शनार्थ भक्तों की भीड़ लगी रहती थी।

–1921 ई० में आपने नमक आन्दोलन में स्वतंत्रता प्रेमियों का साथ दिया और गिरफ्तारी का वारंट भी आया लेकिन आपकी योग मुद्रा देखकर अधिकारियों

को विश्वास नहीं हुआ कि आपने आन्दोलन में सहयोग दिया है । आगे हम इसकी विशेष चर्चा करेंगे ।

–लगभग 1920-21 की बात है आप बद्रीनाथ की यात्रा पर गये और बाबा बद्रीनाथ का दर्शन किया वहाँ से वापिस लौटने पर आपने बाबा के सामने अपनी सबसे प्रिय 'वाणी' का परित्याग सदा-सदा के लिये कर दिया ।

–1928 में भक्तों ने आपकी स्वीकृति के लिये याचना की कि आपके नाम से एक विद्यालय की स्थापना हो–आपकी कृपा नहीं मिल सकी । सभी भक्त उदास हो गये । 1933 का समय आया । भक्तों ने भगवान पर अपना अधिकार किया । आपकी स्वीकृति शिक्षा प्रसार के लिये मिल गयी । इस प्रसंग में आपको जानकारी होगी कि अंगरेजी शासनकाल में विद्यालय की संख्या बहुत कम थी और इसकी सुविधा प्राय: शहरों तक ही सीमित थी । समय ऐसा था गरीब अपने बच्चों को उचित शिक्षा देने में असमर्थ थे । विद्यालय की स्थापना में भक्तों के दो दल हो गये । एक ने कहा संस्कृत विद्यालय ही खोला जाय । तत्कालीन संस्कृत पाठशाला जो निम्न पाठ्यक्रम का था और पं० क्षमानाथ मिश्रजी के आचार्यत्व में संचालित हो रहा था, उसे ही उच्च स्तर में परिणत करने का अपना विचार दिया । दूसरे दल ने मिड्ल इंगलिश स्कूल के लिये सिफारिश की । दोनों दलों के सामने आपने कहा कि अंगरेजी सल्तनत है । सुदूर भविष्य में संस्कृत के प्रति लोगों की अभिरुचि नहीं रहेगी, इसलिये मिड्ल इंगलिश स्कूल की स्थापना के बारे में ही सोचा जाय । काल और वातावरण का सम्यक दृष्टिकोण था । आने वाले युगों की पुकार अपने आपने भक्तों के सामने प्रगट की । फैसला यह हुई कि 1933 में ही मिड्ल इंगलिश स्कूल की नींव डाल दी गयी । गरीब जनता को राहत मिली । तीन वर्षों तक कुटी की ओर से शिक्षकों का वेतन भुगतान, छात्रों की फीस एवं गरीब मेधावी छात्रों को भोजन दिया गया । क्षेत्रीय भूभाग में यह पहला इंगलिश स्कूल था । दूर-दूर के विद्यार्थी ज्ञानार्जन के लिये आये । छात्रावास का प्रबन्ध अच्छा था । कहा जाता है कि सौ से अधिक विद्यार्थी छात्रावास में रहते थे । तीन साल के बाद स्कूल बोर्ड में ले लिया गया ।

–मिड्ल इंगलिश स्कूल की स्थापना के बाद आपका ध्यान हाई इंगलिश स्कूल की ओर गया, जिसको आप दिल में ही छिपाये रहे । इस सन्दर्भ में छ: कोठरी की एक इमारत भी खड़ी की गयी और ऊपर का भाग बनाने के लिये शेष था कि देश में 1942 की क्रांति प्रारम्भ हो गयी । स्कूल-कॉलेज बंद हो गये । जनजीवन अस्त-व्यस्त हो गया । लोग घरों में बंद हो गये । चारों ओर आतंक छा गया । आपका सपना मूर्त्त न हो सका । अरमान दिल में रह गये । आजादी की

लड़ाई की ओर आपका ध्यान गया। भोलन्टियरों को आपने हर संभव सहायता प्रदान की। इस सन्दर्भ में श्री सियाराम मंडल, जगबनी ने बताया कि भूले-भटके भोलन्टियरों की भोजन व्यवस्था कुटी पर होती थी और भोजन बनकर जंगलों में छिपे आजादी के सच्चे सपूतों को जाता रहा। आपके कई भक्त गिरफ्तार हो गये। आपका ध्यान गिरफ्तार भक्तों की ओर गया। वास्तविक साधु वही है जो समाज में रहकर जनकल्याण करे, अपनी जन्मभूमि के प्रति सौहार्द्रता रखे। काल और युग की पुकार पर जनमानस का सच्चा नेतृत्व करे।

आप में सभी गुणों का भंडार था। आप सच्चे अर्थों में युग-पुरुष थे। देश प्रेमियों को आपने साथ दिया—आगे हम इसकी विशेष चर्चा करेंगे।

—अगस्त 1944 से आप यदा-कदा अस्वस्थ रहने लगे। आपके दैनिक कार्यक्रमों में कोई रुकावट नहीं आयी। समयानुसार सभी कार्य होता रहा। सन्निकट रहने वाले भक्तों को मृत्यु तिथि मालूम हो गयी। भक्तों ने काशी चलने का आग्रह किया। आपने दर्शाया कि 'सर्व पाप विनष्यति वाराणसी और वाराणसी कृतं पापं मिथिलायाम् विनष्यति' पुनश्च, जननी जन्मूभूमिश्च स्वर्गादऽपि गरीयसी। जन्म स्थान की अपनी एक विशेष पहचान है, गरिमा है, साथ ही आपने अपने भक्तों को आदेश दिया कि दाह संस्कार कुटी के ठीक उत्तर हो और चलकर आपने उस स्थान को घेर दिया।

—चक्रानुक्रमेण वह कराल काल भी आपके सामने आ गया जो सर्वशक्तिमान है और आपकी आँखें भक्तों की ओर गयी और दर्शाया कि यह मायावी संसार है और हँस दिये। हँसने के पश्चात अंगुलियों पर जप किये और कालान्तर संसार से अपने को अलग कर लिये। इस तरह अपने अपार भक्त समुदाय को असहाय छोड़कर 16 फरवरी, 1945 समय 11 बजकर 55 मिनट में तदनुसार फल्गुन सुदी चौठ शुक्रवार को चल बसे। आगे की पृष्ठों में क्रमानुगत बाबा के रहस्यमय जीवन का स्मरण करेंगे। बोलो प्रेम से मौनी बाबा की जय।

◆◆◆

तिल में तेल, फूलों में सौरभ और आत्मा में परमात्मा का होना और अनुभव करना तथा वास्तविकता को पाना सुगम है, सिर्फ लगन, आसक्ति और विश्वास चाहिये।

आस्था

—मौनी बाबा बचपन से ही इस मायावी और क्षणभंगुर संसार से अलग रहे। माँ मंदिर के आप बालब्रह्मचारी पुजारी थे। पूर्व जन्म का संस्कार जन्म से ही परिलक्षित होता था। अजान बाहु, भव्यशरीर, विस्तृत ललाट एवं सौम्य और गम्भीर मुद्रा आपकी विशेषता रही। सर्वप्रथम पुस्तकीय पठन-पाठन की ओर आपका ध्यान गया। इस संदर्भ में समकालीन बड़े-बड़े विद्वानों की आपने संगति की। प्राणायाम आपका सहसाथी बना। प्राणायाम की पूर्णाहुति में दैविक शक्ति का सुयोग रहा। गोरखपुर के संन्यासी बाबा का माध्यम दैविक शक्ति का एक वास्तविक रूप माना जा सकता है। गुरु गोरखनाथ का दर्शन गोरखपुर प्रवास में ही हुआ। संन्यासी बाबा ने मंत्र विद्या की हस्तलिपि पुस्तक आपको दी थी। इस सम्बन्ध में महान कर्मकांडी एवं तीर्थ सेवी पं० चिरंजीव झा जी ने बताया कि सारे मंत्रों का विधिवत् प्रयोग आपने संन्यासी बाबा के सामने किया। ज्ञात होता है कि सारे मंत्रों की सिद्धि आपने बचपनावस्था में ही की हो। इस तरह की अलौकिक प्रतिभा देखकर थोड़ी देर के लिये संन्यासी बाबा ध्यानस्थ हो गये और ध्यान टूटते ही आपको हृदय से लगा लिये। संन्यासी बाबा की दी हुई भेंट अपनी मृत्यु के दो दिन पहले आपने पं० चिरंजीव झा को दिया जो आपके अतिप्रिय शिष्य थे। बाद में पं० चिरंजीव झा जी ने बताया कि संन्यासी बाबा के रूप में भगवान शंकर थे।

—1956 में पं० चिरंजीव झा जी ने स्वप्निल जगत से मौनी बाबा का ही संकेत पाकर गायत्री महायज्ञ प्रारम्भ किया और बाबा की असीम कृपा से यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

मौनी बाबा क्या थे ? क्या नहीं थे ? इतर मनुष्यों में इसे समझने की क्षमता कहाँ ? आप महान योगी और सच्चे पुरुष थे। वेदान्त और ज्योतिष के प्रकाण्ड मनीषि। गीता के रहस्य को आपसे जानने के लिये विद्वानों की मंडली कुटी पर आती रही। साधु-महात्मा आपके दर्शनार्थ ललायित रहते थे। कितने तो महिनो कुटी पर एवं प्रवास काल में आपकी सेवा में लगे रहे।

—आप साल में छः माह काशी, तीन माह कहरा कुटी एवं तीन माह अन्यत्र भ्रमण में बिताते थे—यही आपके जीवन का क्रम रहा। हमारी प्रबल इच्छा हुई—काशी चलकर आपके सम्बन्ध में जानकारी हासिल करें। काशी प्रवास का पता

ताराकांत झा जी से प्राप्त हुआ। आपने बताया कि अस्सी संगम के किनारे बड़ा जगन्नाथ जी का मंदिर हाता है–उसी हाता में बाबा ठहरते थे। यात्रा में हम सिर्फ दो सज्जन पुरुष का साक्षात्कार इस पुस्तक में रख रहे हैं। एक की चर्चा हमने गाथा प्रकरण में की है–दूसरे हैं नागा साधु। वे वर्षों से इस हाता में रह रहे हैं। आप काफी वृद्ध और क्रोधी स्वभाव के हैं। उनकी आकृति से ही पास बैठने में भय मालूम पड़ता है। दो दिनों के बाद उनका ध्यान हमारी ओर गया। आपने बताया कि उस मौनी को कौन नहीं जानता है–वे पहुँचे हुए महात्मा थे। काशी आने पर लोगों की भीड़ लग जाती थी। जिस समय साक्षात्कार हो रहा था– आपकी आँखें मौनी बाबा के सम्बन्ध में कहते-कहते भींग आयी थी। मौनी को वह दिव्य ज्योति कहाँ प्राप्त हुई–उस राह की खोज में अब भी हूँ। वे रहते तो रास्ता सरल था। सुनसान रात्रि में मौनी श्मशान में रहते थे लेकिन खूबी यह थी कि पास के लोगों को भी यह जानकारी नहीं मिलती कि आपका आना-जाना किस राह से हुआ।

–मौनी ने किसी का दान काशी में स्वीकार नहीं किया फल और मिठाईयों की ढ़ेरी लग जाती थी–जो उपस्थित लोगों में और साधुओं में बाँट दी जाती थी। आप संध्या के पहले अपने हाथों से भोजन बनाते थे और एक संध्या भोजन करते थे। भोजन के समय अगर कोई भूखा पहुँच जाय तो उसी पाक में से थोड़ा निकाल कर दे देते थे और वह भूखा पेट भर सन्तुष्टि के साथ खा लेता था। नागा बाबा ने कहा कि एक दिन मौनी से मैंने पूछा कि आप अपना ही भोग बनाये और उसी भोग में से दो साधुओं को आपने भोजन करा दिया–यह कैसे हो गया ? यह माँ की कृपा है–मौनी ने हँसकर लिख दिया। श्रद्धालु पाठकों से निवेदन है कि–यह कौन माँ थी ? इसकी चर्चा हम आगे करेंगे।

–आप अन्तर्यामी साधक थे। निराकार ब्रह्म की असीम कृपा आप पर थी। आप मनुष्य रूप में मनुष्य नहीं थे। हम आपको देखकर भी पहचान नहीं सके। संसार की वास्तविकता आपके सामने थी। लोगों की भावना को परखकर तदनुसार आपने अपना परिचय दिया। आपकी आस्था निराकार से थी। तप, श्रद्धा और विश्वास का संबल ले–निःस्वार्थ और निलिप्ति होकर फलाशा की प्राप्ति आपने की और आप पूर्ण सफल रहे।

–समालोचनात्मक दृष्टिकोण से कहने का तात्पर्य साधुओं में एक विचित्रता देखी जाती है–वे दूसरे साधुओं की संगति करना नहीं चाहते। उनका एक विचित्र रूप होता है। हम इतर साधुओं की बात रख रहे हैं लेकिन दूसरी ओर ऐसे भी साधु हैं जिन्हें साधना के प्रसंग में एक प्रेरणा मिलती है–दैविक शक्ति का संवाहन

होता है कि अमुक साधु की सेवा से ही वास्तविक राह मिलेगी एवं आत्मज्ञान की प्राप्ति संभव है। 'अमुक साधु' का सीधा सम्पर्क परब्रह्म सच्चिदानन्द से रहता है और उनके इशारे पर उनकी सीमा निर्धारित रहती है। सम्यक दृष्टिकोण से देखने पर पता चलता है कि माननीय मौनी बाबा 'अमुक साधु' की कोटि में थे और यही एक मात्र कारण था कि उनके पास विशिष्ठ साधुओं का आना-जाना लगा रहता था। मोह-माया की कड़ी आपसे कोसों दूर थी। सचेतक को आत्म ज्ञान मिला। सांसारिक तृष्णाओं में लीन मानव सिर्फ आपको 'बाबा' नाम से जान सके।

◆◆◆

ईश्वर ने अपने विशिष्ट भक्तों से कहा–
–लोगों के सामने छिपने की चेष्टा करो–
जैसे कि मैं छिपा हूँ।

मान्यता

–माननीय बाबा के आश्रय में वर्ग भेद, जाति भेद एवं गरीब और अमीर का कोई प्रश्न नहीं था। आपकी आँखों के सामने सभी ईश्वर की संतान हैं। समान दृष्टिकोण था। आश्रम में जो भी आये–जैसा भाव रहा–समस्याओं का निदान हुआ। कट्टर से कट्टर नास्तिक भी आपके सम्मुख आने पर आस्तिक हो गये। आपकी यह मान्यता रही है कि जिस इतर मनुष्यों को आपने आँखों से या हाथों से बैठने का संकेत दिया–उनका मनोरथ पूर्ण हुआ। चाहे वे असाध्य बीमारियों से पीड़ित रहे हों अथवा पारिवारिक समस्याओं से त्रस्त। इस तरह बैठने का आदेश पाने के लिये लोग घंटों खड़े रहते थे। इस प्रसंग में लोक सभा सदस्य अनूप लाल मेहता, बनमनखी (पूर्णियाँ) की साक्षात्कार वार्त्ता 1954, आपके सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

–श्री मेहता ने बताया कि कुटी का दस्तुर मुझे बाबा के भक्तों द्वारा मालूम था–बाबा जिनको बैठने का संकेत देते उनकी इच्छा अवश्य पूर्ण होती थी। आजादी की लड़ाई में मुझे फाँसी की सजा होने वाली थी–बचने की कोई गुंजाइश नहीं थी। थके हारे बाबा के दर्शन हेतु कहरा कुटी पर पहुँचा। बाबा विश्राम कर रहे थे। मैं हाथ जोड़ कुटी के सामने खड़ा हो गया। बाबा के पास उनके चिर-परिचित भक्त धबौली के गुरु शरण सिंह, विष्णुपुर के अवध नारायण सिंह, जगबनी के सियाराम मंडल एवं मदनपुर के ठाकुर प्रसाद सिंह जी थे–जो बाबा की सेवा कर रहे थे। एकाएक बाबा उठ बैठे और मेरी ओर देखे और हँस दिये। अन्तर्यामी बाबा मेरे हृदय की बात जान गये और आपने काफी आत्मीयता के साथ बैठने का आदेश दिया। सच कहता हूँ मैं कृत्य-कृत्य हो गया। फाँसी से राहत मिली–जो असम्भव था। यह बाबा की ही कृपा थी–चमत्कार था।

श्री मेहता ने बताया कि बैठने के क्रम में ही दूसरी और बातें थी–जो आपके सामने रख रहे हैं–बाबा के हाथों से जिनको प्रसादी मिली–वे अपने को भाग्यवान समझते थे और उनकी कामनाएँ पूर्ण होती थी।

–प्रसादी के ही प्रसंग में एक उदाहरण आप पाठकों के सामने रख रहे हैं। कोशी के समय में वर्त्तमान मिठाई (स्टेशन) एक थाना था। थाना का दारोगा

कैलाश झा थे। झा दारोगा तीन जातियों (ब्राह्मण, क्षत्रिय और कायस्थ) के यहाँ पानी भी नहीं पीते थे। अंगरेजी राज्य था। गाँवों में सिपाहियों के आगमन होने से ही लोग घर के अन्दर छिप जाते थे और दारोगा बाबू का तो कुछ और ही रोब था। झा दारोगा के नाम से लोग भय खाते थे। उनका व्यक्तिगत जीवन नास्तिक का था। दाम्पत्य जीवन में पुत्ररत्न की कमी थी जिसके चलते दारोगा जी यदा-कदा घबरा जाते थे। एक दिन संयोगवश अपना इलाका घूमते हुए आप कहरा कुटी पर आये। शाम का समय था। भक्तों की मंडली सत्संग से लाभ उठा रही थी। दारोगाजी की आँखें बाबा की आँखों से मिली और तत्क्षण अपनी नास्तिकता को भूलकर बाबा के चरणों में गिर पड़े। बैठने का आदेश मिला। अन्तर्यामी बाबा से आपके हृदय की बातें छिपी न रही। कुछ देर तक अमन चैन की बातें हुई। बाद में बाबा ने थोड़ी सी प्रसादी अपने भक्तों के आगे बढ़ा दी और दारोगा जी को देने का संकेत दिया। दारोगाजी कुछ देर तक प्रसादी को देखते रहे। भक्तों ने लेने का आग्रह किया लेकिन दारोगा जी की आँखें बाबा की ओर लगी रही। बाबा के चेहरे पर हँसी आ गयी और आपने लिखा कि साधुओं की जात नहीं होती। अगर तुम ब्राह्मण जानकर लेने से अपने प्रण का ख्याल करते हो तो मूर्खता है। कहा जाता है कि बाबा के चरणों में दारोगा जी कुछ देर तक यों ही पड़े रहे। बाद में आपने प्रसादी ली और अपने कार्यक्षेत्र की ओर चले गये। सप्ताह में एक बार आप बाबा के दर्शन करने कुटी पर अवश्य आते रहे।

—इस सम्बन्ध में पाठकों को जानकर यह खुशी होगी कि झा दारोगा को पुत्र रत्न की प्राप्ति ही नहीं हुई—जीवन में जो तरक्की झा ने की—बिहार के पुलिस विभाग में उनका नाम मिटने वाला नहीं है। एक साधारण दारोगा से एस० पी० हुए और अवकाश ग्रहण करने के बाद आप टिस्को, जमशेदपुर में प्रधान सैक्युरिटी आफिसर बने। श्री कैलाश झा जी गोड्डा (संथाल परगना) के रहने वाले एवं उनका ही पुत्र पूर्णियाँ के विख्यात चिकित्सक डा० के० के० झा हैं।

—सम्यक दृष्टिकोण से आंकने पर पता चलता है कि बाबा ने क्रियाशील व्यक्ति को मान्यता दी। सर्वप्रथम श्री मेहता के हृदय में देश प्रेम की आग दूसरी ओर कर्त्तव्यनिष्ठ दारोगा झा जी।

—आपके दरबार में दूर-दूर से विद्वान, कथावाचक, व्यायामी, कवि एवं संकीर्त्तन प्रेमी भक्त समय-समय पर आते रहे। आपकी निगाहों में कालाकारों का स्थान उच्च रहा। आप कला प्रेमी थे। कला प्रदर्शन के बाद कालाकारों को कुटी की ओर से भोजन एवं यथासाध्य पारिश्रमिक भी दिये जाते रहे। आप में अहंभाव

देखा नहीं गया । सरलता, सादगी और सौजन्यता आपके विशिष्ठ गुणों में है । इस प्रसंग में मधेपुरा निवासी कवि शिरोमणि एवं संकीर्त्तन मर्मज्ञ युगलराम 'प्रेम' जी की बातें आपके सामने रख रहे हैं ।

साक्षात्कार 1954 का है । श्री प्रेमजी ने बताय कि एक बार झूलन के अवसर पर बाबा को अपना संकीर्त्तन (स्वरचित) सुनाने के लिये कहरा कुटी पर गये । अपार भक्तों का समूह संकीर्त्तन में भाव विभोर थे । मदनपुर निवासी संकीर्त्तन प्रेमी एवं बाबा के परम भक्त ठाकुर प्रसाद सिंह जी इतने विभोर हो गये कि उठकर नाचने लगे । उस समय का दृश्य ऐसा था कि मालूम हो साक्षात् कृष्ण कुटी पर विराज रहे हों । संकीर्त्तन समाप्ति के बाद बाबा मेरी स्वरचित संकीर्त्तन की कापी को उलट-पुलट कर देखने लगे एवं अपनी ओर से कापी पर दो शब्द अंकित कर दिये 'अनेन श्रीकृष्ण: प्रसन्नोभवतु इति मौनी ।'' श्री प्रेम ने कहा कि जब कभी दिल में अशान्ति रहती है साधु की अमर वाणी को दिल से दुहरा देता हूँ और सच कहता हूँ–असीम शांति प्राप्त होती है ।

इस तरह विवेचन करने पर पता चलता है कि बाबा के दरबार में सभी को समान आदर प्राप्त होता रहा । आप कला प्रेमी ही नहीं थे वरन् कलाकारों को आगे बढ़ने के लिये प्रोत्साहन भी दिया ।

इसी क्रम में एक विशिष्ठ स्वनाम धन्य महात्मा की अन्तर्वाणी आपके सामने रखने जा रहे हैं । लेखक 1949 में धबौली उच्च विद्यालय का छात्र रहा । श्री गोवर्द्धन प्रसाद सिंह जी प्रधानाचार्य थे । सभी विषयों पर आपका समान अधिकार रहा । अध्यात्म में आपकी विशेष निष्ठा थी । तदानुसार आप साधना भी किया करते थे । सरलता और सादगी आपकी विशेषता रही । विद्यालय के ही सामने में बाबा अर्जुन दास जी की कुटी जो भारतीय सभ्यता और संस्कृति का दिव्य स्तम्भ । बाबा को हम सरकार के नाम से सम्बोधित करेंगे--इसलिये कि सभी आपको सरकार ही कहते थे । एक बजकर तीस मिनट दिन में कुटी का द्वार आम चिर-परिचत एवं अपरिचितों के लिये खुला रहता था और यह क्रम तीन बजकर तीस मिनट दिन तक रहता था । पुन: बाबा अपनी एकान्त साधना में लीन हो जाते थे । 1.30 बजे दिन विद्यालय में टिफिन का समय रहता था । हम भी उनके प्रवचन से लाभ उठाते रहे । हमारे हृदय में अध्यात्म की कड़ी सरकार के दरबार से ही अपनी जगह बनाती रही । हमें व्यक्तिगत रूप से सरकार जानते थें–इसलिये कि उनके गुरु भाई पं० चिरंजीव झा ने ही हमारा नाम विद्यालय में दर्ज कराया था । सरकार और पं० झा में काफी आत्मीयता थी । दूसरी बात हमारी पढ़ाई के

सम्बन्ध में गोवर्द्धन बाबू से सरकार बराबर पूछते रहते थे और वर्ग में सदैव सर्वप्रथम रहने के कारण सरकार प्रसन्न रहते थे।

–सर्वप्रथम आपके सामने अपने गुरु गोवर्द्धन प्रसाद सिंह जी का प्रसंग रख रहे हैं। आपने बातचीत के क्रम में बताया कि अपने इलाके में सर्वप्रथम बी० एस० आनर्स की परीक्षा पास कर गाँव आया था और उस समय समाज में यह चर्चा थी कि अंगरेजी पढ़ने वाले पूरे क्रिस्तान हो जाते हैं और धर्म नाम की कोई चीज नहीं रह जाती। बहुत से लोग मुझे देखने के लिये आये थे कि मैं कितना बदल गया हूँ। आपने बताया कि एक दिन मौनी बाबा के दर्शन हेतु इष्ट मित्रों के साथ कहरा कुटी पर पहुँचे। मुझे डर था कि कहीं बाबा क्रिस्तान न समझ बैठें लेकिन मैं आपसे क्या बताऊँ–बाबा ने बहुत सम्मान दिया। वे सर्वज्ञ थे। उनमें एक अलौकिक शक्ति थी जिससे इतर मनुष्यों के हृदयगत भावों को स्वत: जान लेते थे। बाबा की वाणी अब भी याद है–आपने लिखा था कि–समाज के लोग तुम्हें क्रिस्तान कहेंगे यह समाज का पिछड़ापन है, शिक्षा का अभाव है। तुम विद्वान हो–समाज को शिक्षित करना एवं शिक्षा का प्रचार और प्रसार करना अपना कर्त्तव्य समझो। यह सबसे बड़ा धर्म है। इस सम्बन्ध में पाठकों से निवेदन करेंगे कि गोवर्द्धन प्रसाद सिंह ने अंगरेजी सरकार की अच्छी नौकरी का परित्याग कर समाज में शिक्षा का प्रसार का कार्य आरम्भ किया। समाज में व्याप्त अशिक्षा को मिटाने के लिये आपने अपना जीवन विद्या दान में नि:स्वार्थ भाव से अर्पित कर दिया।

–कहने का तात्पर्य बाबा अंगरेजी भाषा की कदर करते थे। आपने कई बार अपने भक्तों को बताया कि भिन्न-भिन्न भाषाओं को सीखकर सही रत्न की खोज करनी चाहिये–इसी में जीवन की सार्थकता है–मान्यता है। इसी क्रम में आपको याद होगा कि हम एक विशिष्ठ महात्मा की अन्तर्वाणी के सम्बन्ध में उल्लेख करने जा रहे थे जो नीचे अंकित है।

सरकार अर्जुन दास जी महाराज की दृष्टि में माननीय मौनी बाबा

एक महान अध्यात्मवादी का अध्यात्म दर्शन !!

[धबौली कुटी के सौजन्य से, 1950]

–सरकार अर्जुन दास जी मौनी बाबा से योग की शिक्षा ली थी। गायत्री मंत्र का जाप एवं उनके वास्तविक गुणों का दिग्दर्शन आपने बाबा से सीखा और क्रियात्मक पद्धति को भी अपनाया और पूर्ण सिद्धस्त हुए। प्राणायाम के क्षण में

आपका आसन भूतल से ऊपर उठ जाता था और आप परब्रह्म में लिप्त हो जाते थे।

–आपने स्पष्ट कहा कि श्रद्धेय मौनी बाबा एक परम सिद्ध महात्मा रहे। अलौकिक प्रतिभा के धनी थे। स्वार्थ में लगे व्यक्ति आपके सही रूप का दर्शन नहीं कर सके। आप में यौगिक क्रिया की सारी सम्पदाएँ थीं। श्रद्धा और लगन के द्वारा कोई भी सत्संगी आपसे इस गुण को प्राप्त करने में सक्षम हो सकता था। आपने 'जिन ढूँढ़ा तीन पाईयाँ' का उदाहरण सामने रखा। हृदय की मान्यता में आपने दर्शाया 'मैं मौनी बाबा का जब कभी स्मरण करता हूँ–हँसता हुआ चेहरा एवं गंभीर व्यक्तित्व सामने नाच जाता है और मेरे आगे बढ़ने की कामना उनके हृदय में देखी जाती है।

◆◆◆

–प्रकाश के माध्यम से वस्तुस्थिति आँखों के सामने आ जाती है–वस्तुस्थिति का सहारा ले प्रकाश को हम नहीं पा सकते।

देश प्रेमी बाबा

–लगभग 1901 से ही आप स्वदेशी वस्त्र खादी पहनते थे और उसमें आपकी निष्ठा थी। तत्कालीन समय में खादी पहनना सरकारी कानून के खिलाफ था लेकिन आपने अंगरेजी हुकूमत की तनिक भी परवाह नहीं की। नमक कानून भंग में आपने क्रान्तिकारियों का सफल नेतृत्व किया। कहरा कुटी से एक मील की दूरी पर सुखासन बस्ती की फुलवारी में नमक बनाकर अंगरेजी तानाशाही को आपने खुली चुनौती दी और क्षेत्रीय जनता के हृदय में देश प्रेम की आग जाग्रत की। आपके साथ मुख्यतः शिवनन्दन मंडल, रानीपट्टी, शिवाधीन सिंह, सुखासन, कुंज बिहारी लाल दास, सुखासन, ठाकुर प्रसाद सिंह, मदनपुर, रामेश्वर झा कहरा, झुनकू प्रसाद सिंह एवं परशुराम सिंह धबौली, सियाराम मंडल, जगबनी एवं अवध नारायण सिंह, विष्णुपुर थे और पीछे अपार जनसमूह। आजादी के सच्चे सपूतों ने सुखासन की उस निर्जन भूमि से धर्म प्राण रक्षक मौनी बाबा के नेतृत्व में 'अंगरेजों भारत छोड़ो का आह्वान किया। सुखासन की जिस भूमि से देश प्रेमी बाबा ने शिव (शिवनन्दन मंडल) और शिवा (शिवाधीन सिंह) का संगम ले गुलामी की जंजीर को तोड़ने का गगन भेदी नारा दिया था और स्वतंत्रता संग्राम के प्रेमियों ने आपका साथ दिया–उसी स्थान पर कालक्रम से मुखिया नारायण प्रसाद सिंह जी के सद प्रयास से अनुग्रह उच्च विद्यालय क्षेत्रीय जनता में शिक्षा प्रसार और प्रचार कर रहा है। कौन जानता था कि 1921-22 का वह मिलन 33 वर्षों के बारद समाज में फैली अशिक्षा का नाश कर अपने सुरभित-सौरभ से क्षेत्र को सुवासित कर सकेगा।

–अनुग्रह उच्च विद्यालय के पास ही शिव और शिवा अंगरेज सिपाहियों के द्वारा दुसह याचनाओं को सहते हुए गिरफ्तार कर लिये गये। माननीय बाबा के नाम भी वारंट आया। अंगरेज सिपाहियों ने जनता में आतंक फैला दिया। कुटी पर बैठे भक्त मंडली सिपाहियों (गोरा पलटन) को देखकर कंपित हो गयी। बाबा के कान्तिमय मानस पर जरा भी शिकन नहीं। अंगरेज अधिकारी आपके भव्य और गंभीर मुख मुद्रा को देखकर आपके कदमों में झुक आये। आपने लिखा कि मुझे पकड़ के ले चलो। इस सम्बन्ध में सियाराम मंडल ने बताया कि अधिकारी महोदय ने अपनी डायरी में नोट किया और सरकार के पास रिपोर्ट भेजा कि "मौनी बाबा महान योगी हैं–इनको इस मायावी संसार से क्या

मतलब !'' मौनी बाबा को जेल ले जाने का रोष भक्तगण बर्दास्त नहीं कर सकेंगे और हजारों-हजार उनके साथ जेल चल पड़ेंगे ।

बाबा के अनन्य भक्त

सच्चे देश सेवक शिवनन्दन मंडल

प्रथम न्याय मंत्री विहार सरकार

–प्रथम न्याय मंत्री मंडल जी सियाराम मंडल, जगबनी, के आग्रह पर उनके द्वारा स्थापित विद्यालय का उद्घाटन करने आये । मंच पर लेखक ने जो सम्प्रति वहाँ परस्थापित थे–स्वागत भाषण दिया । सभा की अध्यक्षता शिवाधीन सिंह जी कर रहे थे । यह 1954 की घटना है । मंत्री जी का रात्रि विश्राम भी वहीं था । शिवाधीन बाबू ने मेरा परिचय उनसे कराया । वे मेरे स्वागत भाषण से बहुत प्रभावित हुए थे । विद्यालय भवन निर्माण में मंत्री जी का प्रबल योगदान रहा ।

प्रसंगवश रात्रि में मौनी बाबा की चर्चा हो आयी । मंडल जी ने बताया कि बाबा की छत्रछाया में हमलोग निडर होकर आजादी का बिगुल बजाते थे । वे हमारे गार्जियन थे । आपने बताया कि घटना 1931-32 की है । मैं मधेपुरा जेल में बन्द था और कल होकर मेरी रिहाई होती–मैं पूर्णतया अस्वस्थ्य था । दिन के दस बजे जेल से बाहर हो रहा था–गेट पर ऐसा मालूम हुआ कि बाबा अपने भक्त समुदाय के साथ अगुवानी करने को खड़े हैं । मैं बीमार था, मधेपुरा के साथियों ने आराम करने की सलाह दी लेकिन कुंज बिहारी और खोखा प्रसाद के साथ कहरा कुटी की ओर बढ़ गये । कुटी पर पहुँचते-पहुँचते मैं स्वस्थ हो गया जैसे बीमार ही न पड़े हों ।

–कुटी पर आकर देखता हूँ कि बाबा कम्बल पर कम्बल ओढ़े पड़े हैं । भक्तों ने कहा कि कुछ देर पहले स्वस्थ थे, अकस्मात ऐसा हो गया । थोड़ी देर बाद बाबा जगे । उठते ही बाबा की निगाहें मेरे ऊपर पड़ी और आप हँसने लगे । बाद प्रसादी मिली । मेरे जीवन का पहला मौका था जब आपने मेरे सिर पर हाथ रखा और खाने का आदेश दिया । बाबा अपने भक्तों के कष्टों को अपने सिर पर ले लेते थे और दूसरी ओर भक्त अपने को स्वस्थ पाता था ।

बाबा की ही कृपा का फल है–आज बिहर का न्याय मंत्री बना बैठा हूँ और सोचता हूँ काश, इस समय बाबा होते ! आज भी उनकी पूजा करता हूँ और उनके द्वारा प्राप्त प्रेरणा के आधार पर ही मेरा कार्यक्रम चलता है ।

समाजसेवी बाबा

–बाबा की कुटी पर क्रान्तिकारियों को शरण मिलती। कुटी की ओर से रहने और भोजन की व्यवस्था होती थी। बाबा के समीप रहने वाले भक्तों को भी यह पता नहीं होता था कि बाबा की शरण में किस प्रकार के अतिथि आये हुए हैं। इस सन्दर्भ में सियाराम मंडल जी ने बताया कि श्री जयप्रकाश नारायण जब जेल से भागकर आये तो गुप्तवेश में मेरे अस्थायी निवास श्रीपुर में ठहरे हुए थे–दो दिनों के बाद स्थान परिवर्तन करा दिया गया और खपौती जंगल में नदी के किनारे आ गये। भोजन व्यवस्था एवं संरक्षण का भार मेरे ऊपर था। उनके पीछे खुफिया विभाग लगा हुआ था। कई दिनों तक भोजन की व्यवस्था बाबा की कुटी पर हुई और रात में हम अपने साथियों के साथ खपौती जंगल भोजन पहुँचाते रहे।

–एक दिन की घटना याद है–कुटी से ही अपनेएक साथी के साथ भोजन व्यवस्था कर जयप्रकाश बाबू के पास चले। वैसे, हमलोग दिन में नाव ठीक कर लेते थे लेकिन उस दिन कुटी पर ही देर हो गयी तब तक राह देखकर नाव वाला चला गया था। रात का मौसम। नदी में पानी भरा हुआ था। निराश होकर कुटी पर वापिस लौट आये। बाबा का फाटक बंद था। भोजन सामग्री को आम के पेड़ में लटकाकर साथियों के साथ कुटी प्रांगण में ही लेट गया। सबेरे बाबा की निगाहें हमलोगों पर पड़ी। रात की कहानी हमलोगों ने सुनायी। बाबा हँसने लगे। कुछ देर के बाद जलपान की सामग्री लेकर जयप्रकाश बाबू के पास गये और क्षमा याचना की–रात नहीं पहुँच सके। जयप्रकाश बाबू ने बताया कि हमलोग रात में भूखे नहीं रहे–एक नौजवान आकर भोजन पहुँचा गया था। सुनकर अवाक रह गये। कौन भोजन लेकर आ सकता है ? हमलोगों के सिवा कौन जानता है–इस गुप्त प्रवास को ? यह महामान्य बाबा की ही महिमा थी।

–इसी क्रम में सियाराम मंडल ने काशी प्रवास की चर्चा की। आपने बताया कि बाबा से आशीर्वाद लेने के लिये काशी प्रवास में भी बहुत से क्रान्तिकारी आते रहे। चन्द्रशेखर 'आजाद' (पंडित जी) गुप्तवेश बनाये कई दिनों तक बाबा की सेवा करते रहे। अन्तर्यामी बाबा ने सच्चा मार्ग दर्शन किया।

–कहने का तात्पर्य सिद्ध योगी रहते हुए भी आप अपने देश को आजाद देखना चाहते थे। आप में देश-प्रेम की एक अजीब लहर थी। कई क्रान्तिकारियों को आपने फाँसी से बचा लिया–जैसे, अनूपलाल मेहता, एम. पी. बनमनखी (पूर्णियाँ) एवं यदुनन्दन झा एम० एल० ए० आलमनगर ग्राम बिशौनी (खगड़िया)

आदि के नाम लिये जाते हैं और यही कारण था कि आप ने स्वदेशी वस्त्र धारण किया। नमक कानून को भंग कर सरकार को खुली चुनौती दी और इंगलिश स्कूल की स्थापना कर समाज में अंगरेजी शिक्षा का प्रचार किया ताकि लोग अंगरेजी के माध्यम से अंगरेजों को जान सके और शिक्षा पाकर अपने को आज़ाद कर सके—कितनी बड़ी दूरदिर्शता भी आप में।

◆◆◆

कुटी का महत्त्व

–असाध्य रोगों से पीड़ित, डाक्टरों द्वारा उपेक्षित जब बचने की कहीं आशा नहीं रही–उस हालत में कहरा कुटी पर लोग बाबा की छत्रछाया में आये–लाभ हुआ। स्वस्थ होकर अपने घरों को गये। विश्व का चमत्कारिक विज्ञान उन महान योगी के सामने अपना कोई अस्तित्व नहीं रख सका।

–आपको मालूम होना चाहिये–बाबा अपने भक्तों में एक अलौकिक शक्ति का संचार कर देते थे और भक्तों के ही माध्यम से बीमारी की इलाज हो जाती थी। कहने का तात्पर्य बाबा के पास कोई पीड़ित जन आये और उनके ऊपर आप की कृपा हो गयी, उस पीड़ित जन को अपने किसी अमुक भक्त के पास, दवा लेने का आदेश प्रदान कर भेज देते थे। बाबा द्वारा अधिकृत भक्त जिनके पास न वैद्यगिरी का अनुभव है और न कोई डाक्टरी प्रमाण पत्र। पीड़ित जन बाबा का आदेश उनके सामने रखते थे। कहा जाता है अधिकृत भक्त कोई भी जड़ी-बूटी उखाड़ कर पीड़ित जन की सेवा में रख देते थे और बीमारी दूर हो जाती थी। वे सभी अधिकृत भक्त अब इस संसार में नहीं हैं–जिनके नाम हैं– पं० चिरंजीव झा, ठाकुर प्रसाद सिंह, पं० जगदीश झा, सियाराम मंडल, पं० जलधर झा एवं अवध नारायण सिंह जी।

–बाबा के ही आशीर्वाद से डॉ० सतीश, मधेपुरा ने काफी यश और ऐश्वर्य प्राप्त किया। अधिकृत भक्तों द्वारा दी जाने वाली जड़ी-बूटियाँ अब भी मौजूद हैं लेकिन अब उसका कोई असर नहीं है। ऐसा क्यों ? इसलिये कि वह दैविक शक्ति दूर है ? यह शक्ति अब भी कहरा कुटी में विद्यमान हैं लेकिन श्रद्धा और विश्वास की कमी है जिसके चलते हम उनसे कोसों दूर हैं आज भी पुराने भक्तों के संतान कुटी पर आते हैं और उनके मनोरथ पूर्ण होते हैं।

–कहरा कुटी में उस महान दिव्यात्मा की दिव्यज्योति है जो अजर-अमर है और सदैव प्रकाशमान। कुटी की मिट्टी से कितने संतानहीनों को संतान की प्राप्ति हुई है। पीड़ित जनों को त्राण, योगियों को योग, विद्वानों को नया दर्शन, विज्ञान को आध्यात्मिकता की सीख एवं बे सहारा को सहारा।

–सम्यक विवेचन के आधार पर कहरा कुटी में अध्यात्म का मनीषी छिपा बैठा है। मिट्टी के कण-कण में सांख्य और कर्मयोग की सुलभ और सरल

पंक्तियाँ लिखी हैं–आबोहवा में स्वदेश प्रेम का जागरण है–आह्वान है। युगों से विश्व का चमत्कारिक विज्ञान उस मिट्टी से हार खाता आया है–आज भी नयी सीख ले रहा है। प्रेम, श्रद्धा और विश्वास का संबल ले आज की बाबा की अलौकिक शक्ति का दर्शन कहरा कुटी पर कर सकते हैं। कौन कहता है–कहरा कुटी बीरान हो गयी ? बाबा चले गये ? बाबा आज भी हमारे बीच हैं और सच्चे मार्गदर्शन का प्रतीक है। साधु और संत अमर होते हैं। शक्ति का एक विशेष रूप होता है। शक्ति में तार का संचार करने से तार तरंगित होता है और दिव्य प्रकाश सामने आता है सिर्फ कुशल कारीगरों की आवश्यकता है। बाल्व की सुन्दरता भव्य भवनों में देखी जाती है। हमारा मन मंदिर उदार और विशाल होना चाहिये। केवल बुद्धि और विवेक के टूटे–बिखरे तारों को आपस में जोड़कर झंकृत करना है।

◆◆◆

अपने जन्म स्थान पर जो सम्मान और आदर मौनी बाबा को मिला, बिरले जनों को ही मिल पाता है।

शिव भक्त

—बाबा शिव के बहुत बड़े भक्त थे। गोरखपुर प्रवास के समय और योग साधना के क्रम में साक्षात् शंकर भगवान ने संन्यासी बाबा का रूप लेकर योग मुद्रा के विशिष्ठ तत्वों से आपको अवगत कराया। कहरा कुटी पर बाबा की छत्रछाया में दो विशालकाय सर्प थे। एक सर्प को तो लेखक ने स्वयं देखा भी था। सर्प का आगमन कुटी पर कब हुआ—कहाँ से आया ? किसी को मालूम नहीं है। हम इसकी विशेष चर्चा आगे करेंगे। बाबा स्वयं अपने हाथों से दूधपान कराते थे और दोनों सर्प कुटी के भीतर ही रहते थे। बाबा की मृत्यु से पूर्व ही दोनों सर्प इस असार संसार को छोड़ चले। बाबा ने अपने हाथों से विधिवत संस्कार किया। सांपों की मृत्यु के बाद बाबा ने अपने भक्तों को बताया कि 'अपनी प्रिय वस्तु भी अगर साथ छोड़ दे तो अपनी मृत्यु निकट समझो।' यह एक बहुत बड़ा दर्शन है। आगे चलकर बातें अक्षरशः सत्य हुई।

—हाँ, तो हम निवेदन कर रहे थे कि बाबा शिव के बहुत बड़े भक्त थे और शिव की विशेष कृपा उन पर थी—इसलिये बद्रीनाथ में भगवान शंकर को बाबा ने अपनी प्रियवाणी का अर्पण कर—महान त्याग का परिचय दिया।

—कहा जाता है कि काशी प्रवास में बाबा श्मशान में रात्रि की नीरवता में चले जाते थे और पास के भक्तों को पता भी नहीं होता था। शंकर के भक्त शंकर में मिलते रहे। मणिकर्णिका घाट के नजदीक रहने वालों का कहना है कि आज भी मध्यरात्रि में श्मशान से डमरू की आवाज आती है। शास्त्र की मान्यता है कि काशी शिव के त्रिशूल पर है और यही कारण था कि बाबा अपने जीवन का अधिक भाग काशी में बिताये।

—आस्था प्रकरण में आपने 'माँ' की बात सुनी है। इस सम्बन्ध में जानकारी है कि काशी प्रवास में बाबा अस्सी संगम के किनारे जगन्नाथ जी के मंदिर हाते में रहते थे और हाते में एक मां भी थी। बाबा को मां से विशेष प्रेम था। मां को भी बेटा से स्नेह। प्रातःकाल बाबा बिछावन से उठकर मां को प्रणाम करते और बाद में अपना दैनिक नित्य-कर्म।

—माननीय बाबा की योग-साधना में मां स्वरूपिनी शक्ति की बहुत बड़ी

कृपा है । मां साक्षात् पार्वती रूप थी । आपने मौनी को आत्मज्ञान दिया । एक दिन काशी प्रवास के समय भक्तों ने बाबा से मां का परिचय प्राप्त करना चाहा । जिज्ञासु भक्त बाबा के साथ माता की कोठरी की ओर गये–जहाँ मां का निवास था । उस समय मां योगमुद्रा में लीन थी । उनका आसन शून्य में स्थित था । बाबा मां को देखकर ध्यानस्थ हो गये लेकिन भक्तगण की आँखें दिव्य रूप की ओर लगी रहीं । इस सम्बन्ध में बाबा के भक्तों ने बताया कि दो घंटे के बाद मां अपने पूर्व की स्थिति में आ गयी और मौनी को ध्यानस्थ पाया । वे आत्म विभोर हो गयी । अपने मौनी के सिर पर हाथ फेर दिया और गले से लगा लिया । वात्सल्य का वास्तविक दृश्य हमलोगों के सामने था । भक्तों ने कहा उस दिन से हाते में कां का रूप नजर नहीं आया ।

इस तरह हम देखते हैं कि भगवान शंकर और शक्ति स्वरूपिनी मां पार्वती दोनों की कृपा मौनी पर रही । इस पावन संगम पर जो भी आये बाबा के दर्शन से निराश नहीं लौटे । इस तरह कहरा की पावन कुटी पर भी भगवान शंकर और मां पार्वती की असीम कृपा रही ।

◆◆◆

मिथिला और मौनी बाबा

–मृत्यु के समय बाबा ने कहा–'सर्व पाप विनस्यति वाराणसी और वाराणसी कृतं पापं मिथिलायाम् विनस्यति' मनुष्य के सभी पाप काशी में मृत्यु होने से धुल जाते हैं लेकिन काशी में किये गये पापों का निवारण मिथिला में ही संभव है। कहने का अभिप्राय मिथिला की महत्ता युगों से चली आयी है। मिट्टी के कण-कण में ऋषि-मुनियों की आत्मा है। बृहद विष्णु पुराण में मिथिला की सीमा निर्धारित की गयी है। हिमालय और गंगा के मध्य, कोशी और गंडकी से समलंकृत जहाँ पंच दश नदियाँ आकर संगम का काम करती हैं। एक किनारे गंगा की समतल भूमि की सुन्दरता दूसरी ओर सदा बहार हिमालय का लुभावना दृश्य और 24 योजन अर्थात् 192 मिलों में फैली मिथिला नगरी। नन्दन वन सा पवित्र और पावन। जिसकी सुन्दरता को देखने के लिये संसार की आँखें लगी रहीं। मिथिला का ही एक भाग वैशाली है जहाँ लिच्छवी के समय प्रजातंत्र राज्य था। जिस नगरी में भगवान बुद्ध ने कई बार अपना सम्मेलन किया। यह वही प्राचीन नगरी है–जहाँ जैनियों के अन्तिम तीर्थंकर महाबीर पैदा हुए।

–वैदिक काल में मिथिला की बात आयी है। रामायण के प्रणेता वाल्मीकि जी इसी मिथिला में जन्म लिये। शतपथ ब्राह्मण में राजा विदेह की बात आयी है जो जनक नाम से मिथिला में राज किये। वृहदारण्यक उपनिषद् में कहा गया है कि राजा जनक के दरबार में विद्वानों की बहुत बड़ी मंडली थी जो आपस में वेदान्त दर्शन के ऊपर वाद-विवाद किया करती थी। विद्वत् मंडली ने संसार के सामने अपनी विद्वता का अद्वितीय परिचय दिया। मंडली में याज्ञवल्क्य मुनि प्रधान थे। आपने याज्ञवल्क्य स्मृति की रचना की। इसी दरबार में स्त्री विदुषी मैत्री और गार्गी भी थीं। विद्वत मंडली में दोनों स्त्रियों का काफी नाम और सम्मान था। इतिहासकारों ने इस विद्वत मंडली का होना प्रथम और तीसरी शताब्दी के बीच रखा है। वेद व्यास ने अपने पुत्र शुकदेव जी को विशिष्ठ अध्ययन के लिये जनक जी के पास मिथिला भेजा था।

–महाभारत में मिथिला की चर्चा आयी है। भीम ने मिथिला पर चढ़ाई कर इसे जीता था। कृष्ण और बलदेव भी श्यामन्तक मणि की खोज करने मिथिला

आये थे । दुर्योधन और भीम ने गदायुद्ध का प्रशिक्षण बलैना ग्राम में लिया था–जो सम्प्रति दरभंगा जिला में है ।

–न्यास शास्त्र के प्रणेता गौतम ऋषि इसी मिथिला में पैदा हुए–जिन्होंने शापवश अपनी पत्नी अहिल्या को पत्थर (शिला) बना दिया । जनकपुर जाने की राह में भगवान राम ने अहिल्या को जो प्रस्तर बनी थी–अपना अंगूठा स्पर्श कराकर पुनः स्त्री बना दिया । अहिल्या का जहाँ उद्धार हुआ है–आज उसे अहैरी ग्राम कहते हैं–जो दरभंगा जिला में है ।

–साख्य दर्शन के रचयिता कपिल मुनि यहीं पैदा हुए जो स्थान आज कपिलेश्वर के नाम से विख्यात है । कपिलेश्वर के पास ही विसौली ग्राम है–वह स्थान विश्वामित्र का माना जाता है–दोनों स्थान दरभंगा जिला में है ।

–शृंगी ऋषि मिथिला में पैदा हुए–वह स्थान आज सिंहेश्वर है–जो सम्प्रति मधेपुरा जिला में है । राजा विराट का स्थान मिथिला है जहाँ गुप्तवास में मां कुंती के साथ पाँचों भाई पाण्डव आकर ठहरे थे–वह स्थान विराटपुर जिला सहरसा में है ।

नवीं शताब्दी में पं० वाचस्पति मिश्रजी, हुए जिन्होंने कई वेदान्त पुस्तकों की रचना की । आपके समकालीन मंडन मिश्र हुए जिनकी धर्मपत्नी भारती भी परम विदुषी थी । अन्तिम शास्त्रार्थ का क्रम जगद्गुरु शंकराचार्य ने मिथिला में आकर दिया । मंडन मिश्र तो परास्त हो गये लेकिन भारती ने अपनी अमौध विद्वता का परिचय दिया । वृहदारण्यक उपनिषद् में इसकी चर्चा आयी है । जहाँ मंडन मिश्र हुए–शंकराचार्य का शास्त्रार्थ हुआ वह पवित्र स्थान आज महिषी जिला सहरसा है ।

–स्मृति का विकास कार्य जितना मिथिला में हुआ–भारत में कहीं देखने को नहीं मिला ।

–12वीं शताब्दी में जयदेव कवि हुए जिन्होंने 'गीत गोविन्द' की रचना की । 14वीं शताब्दी में मैथिल कोकिल विद्यापति हुए । 19वीं शताब्दी में इसी मिथिला में महान हठयोगी, परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी जी हुए जिनकी कुटी बनगाँव जिला सहरसा में है । आपका जन्म परसरमा ग्राम में हुआ था–जो सम्प्रति सहरसा जिला में है ।

–मिथिला जगत जननी मां सीता की भूमि है जहाँ मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम को आना पड़ा । मिथिला साधना की भूमि है जहाँ गंगेश एवं मदन उपाध्याय

जी हुए। कहने का तात्पयर्य मिथिला सदा से ऋषि-मुनियों का तपोवन रहा। वृहद् विष्णु पुराण में मिथिला को नमन किया गया। मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तर गता अपि तेषां मुक्तिश्च भुक्तिश्च जायते नात्र संशयः। मिथिलावासमासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद् भक्तैः सह मोदते। मौनी बाबा में दिव्यशक्ति थी वे भला मिथिला को छोड़कर वाराणसी (काशी) कैसे जाते ?

◆◆◆

–प्रत्येक गाँव के नामांकन में एक इतिहास छिपा है–इसे खोजना चाहिये।

भक्तों की डायरी से

1. बाबा के परम प्रिय शिष्य सियाराम मंडल, ग्राम जगबनी, थाना सिंहेश्वर जिला सहरसा (साक्षात्कार 1954-55)

–श्री सियाराम मंडल जी बाबा के परम भक्त थे। आप विगत चालीस वर्षों से अन्न का परित्याग कर सिर्फ पानी और दूध का आहार ले अपनी साधना पर हैं। साक्षात्कार के क्रम में आपने बताया कि हमारे परिवार में अधिकतर लोगों का दिमाग विक्षिप्त हो जाता था, जब से कुटी की शरण में आये हैं–एक भी ऐसे लक्षण अब सामने नहीं है।

–आपने कहा कि मेरा भतीजा युगेश्वर मंडल जो सम्प्रति सब इंसपेक्टर ऑफ स्कूल्स हैं–मौनी बाबा की ही कृपा है। एक बार युगेश्वर बी० एस० ऑनर्स की परीक्षा देने भागलपुर जा रहा था मैंने उनसे कहा कि बाबा का दर्शन करने के बाद ही जाओगे लेकिन संयोगवश उसने ऐसा नहीं किया–इसलिये कि उन्हें घमंड था कि मैं पास करूँगा ही, अच्छे विद्यार्थियों में उनका नाम था। परीक्षा के बाद, रिजल्ट निकला और फेल कर गया–जिसकी उम्मीद स्वप्न में भी नहीं थी। दूसरे बार बाबा का दर्शन कर परीक्षा देने गया–मुझसे माफी मांगी और इस बार उन्हें अच्छी सफलता मिली–जिसकी कल्पना नहीं थी।

–एक बार युगेश्वर भयानक बीमारी के फेरे में आ गया और मुँह से काफी खून निकलता था–बचने की कोई उम्मीद नहीं थी। डाक्टरों ने जबाब दे दिया लेकिन मौनी बाबा की ऐसी कृपा रही बगैर दवाई के आराम हो गया।

–श्री मंडल के छोटे भाई सीताराम मंडल मूर्ख थे लेकिन बाबा के आशीर्वाद से पूरी रामायण आप जबानी सुनाते थे और उसके गूढ़ अर्थ भी।

–श्री मंडल ने बताया कि घूटर यादव जो सम्प्रति शिक्षक हैं–उनके पेट में पत्थर हो गया–बाप का एकलौता लड़का। काफी इलाज के बाद भी बीमारी दूर नहीं हुई। मेरे कहने पर वे बाबा की शरण में गये और दर्शन मात्र से ही बीमारी दूर हो गयी।

–जगबनी क्षेत्र में माननीय बाबा का काफी नाम है। अगर मंडल जी की सारी बातें लिखी जाय तो एक मोटी किताब बन जायगी। आपको यह सुनकर

आश्चर्य होगा कि मंडल जी ने बाबा के आशीर्वाद से इस क्षेत्र के हजारों पीड़ित बन्धुओं का कल्याण किया है। आपने बताया कि बाबा का साक्षात् दर्शन जब चाहता हूँ–कर लेता हूँ। यह ताकत मुझमें कहाँ से आयी–मुझे पता नहीं।

2. पं० चिरंजीव झा, ग्राम कहरा-मदनपुर की अपनी वाणी (1955)

–महान कर्मकांडी एवं तीर्थ सेवी पं० चिरंजीव झा बाबा के परम भक्त थे। भेंटवार्ता में जो कुछ लेखक के प्रकाश में लाया गया–संक्षिप्त रूप आपके सामने प्रस्तुत है।

–आपने बताया कि साधना के क्रम में बाबा अपने भक्तों को काफी जाँचते थे। मेरे साथ भी ऐसी घटना सिर्फ एक बार घटी थी और उस दिन से मैंने जीवन को जीवन समझा। मेरा समर्थ लड़का आचार्य प्रथम खंड में था–जिनकी अकाल मृत्यु हैजा में हुई। कालान्तर काला नाग पैर में काट लिया लेकिन बाबा द्वारा दी गयी राह पर मैं अटल रहा। साँप का विष मेरे शरीर में असर नहीं कर सका लेकिन पुत्र शोक से काफी सदमा पहुँचा। बाबा के समीप जब गये तो आप सिर्फ हँस दिये और आपने बताया कि 'इस संसार में कोई किसी का नहीं है।' मोह और ममता सिर्फ जीवन जीने के लिये है। शाश्वत पदार्थ की प्राप्ति से बिमुख हो जाना पड़ता है। महामान्य बाबा ने आपको मोह त्यागने की दिव्य ज्योति दी और तीर्थाटन का आदेश दिया। इस संदर्भ में हम बाबा की एक लौकिक बात रखने की दृष्टता कर रहे हैं। बाबा हर तीर्थ सेवी के सामने दो बातें रखते थे–

(क) बिना टिकट का रेल सफर नहीं करना।

(ख) तीर्थाटन में किसी से कुछ मांगना नहीं।

–पं० चिरंजीव झा के सामने भी दोनों बातें आयी–साथ ही साथ अन्तर्यामी बाबा ने कहा कि तीर्थों में यत्र-तत्र तुम्हें अपने पुत्र एवं परिवार के अन्य मृतकों से साक्षात्कार होंगे लेकिन उनकी राह रोक कर बातें नहीं करना। यह सिर्फ देखने के लिये, समझने के लिये सारी समस्याएँ हैं और इसी में आत्मज्ञान की कड़ी निहित है। इस सम्बन्ध में पं० चिरंजीव झा जी ने बताया कि बाबा की वाणी बिल्कुल सत्य रही। रामेश्वरम् में वास्तविकता देखने को मिली। मेरा मृतक पुत्र शोभा एक कुंड में हाथ से जल निकाल कर पी रहा था और बारी-बारी से अपने परिवार के अन्य मृतकों को भी देखा। तीर्थों में रामेश्वरम् के बाद अपने पुत्र एवं अन्य मृतकों से गया श्राद्ध में साक्षात्कार हुआ।

—आपने बताया कि बाबा की छत्रछाया हर घड़ी मेरे साथ रहती है। स्वप्निल जगत से बाबा का आदेश पाकर ही मैंने 1956 में गायत्री महायज्ञ किया। इस यज्ञ में बाबा मेरे साथ रहे।

3. शास्त्रार्थ महारथी पं० कमलाकांत शास्त्री जी के सौजन्य से वार्त्ता (1952-53)

—शास्त्री जी इस संसार में नहीं रहे। कहरा की धरती पर जन्म लेकर अपनी वाक् विद्वता से सम्पूर्ण भारत में एक विशेष पहचान बनायी। आपसे लेखक की काफी घनिष्ठता थी। आप संस्कृत साहित्य के प्रकाण्ड विद्वान थे। सभी शास्त्रों पर एक सम्यक अधिकार। आपने अपना अधिक समय शास्त्रार्थ करने में राजे-रजवारों के यहाँ व्यतीत किया और इस संदर्भ में विद्वत् मंडली ने आपको काफी सम्मान दिया। आप जयपुर नरेश के दरबार में राजपंडित रहे। आपके जीवन का अन्तिम समय शास्त्रार्थ समागम में गुजरात, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, एवं मध्य प्रदेश में बीता। अन्तिम समय में मध्य प्रदेश के सरगूजा स्टेट में आ गये।

—मौनी बाबा के सम्बन्ध में आपने बताया कि मेरे ऊपर बाबा की असीम कृपा थी। उनके दरबार में विद्वानों का कदर था। आपने बताया कि पूना (महाराष्ट्र) प्रवास में मैं बीमार पड़ गया हालत नाजुक हो गयी। मेरे एक शिष्य ने काफी उपचार किया लेकिन बीमारी दूर नहीं हुई, बढ़ती ही गयी। बचने की कोई आशा नहीं रही। रात्रि के अन्तिम पहर, अर्द्धनिद्रा में मौनी बाबा का दर्शन हुआ। और बाबा ने कहा 'अब मैं आ गया हूँ—सब ठीक हो जायगा। दूसरे दिन सबेरे से ही मेरी बीमारी दूर होने लगी और रात्रि होते-होते ठीक हो गयी।

—आपने बताया कि अपने प्रवास काल में कई साधुओं के दर्शन हुए लेकिन मौनी बाबा में जो अलौकिक गुण था, कहीं देखने को नहीं मिला। बाबा पर जो आश्रित रहा—जहाँ भी रहा उनका कल्याण हुआ। बाबा में समदृष्टि थी—वे अपने भक्तों के कष्टों का सदैव निवारण करते थे।

4. श्री विन्देश्वरी प्रसाद मंडल भूतपूर्व मुख्य मंत्री बिहार सरकार की अपनी वाणी :

—साक्षात्कार के क्रम में आपने बताया कि बाबा में जाति-पात एवं ऊँच-नीच का कोई भेद-भाव नहीं था। वे सच्चे अर्थों में महात्मा थे। उनका जीवन जनहित में अर्पित था। हमारे परिवार से उनका गहरा सम्बन्ध रहा। सप्ताह में कम से कम एक बार हमारे परिवार के सदस्य बाबा के दर्शन हेतु कहरा कुटी पर जाते थे। हमारे घर के डाक्टर हित चिन्तक एवं एक सफल अविभावक के

रूप में बाबा थे। उनके जीवन काल में हमारे परिवार को किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रही। बाबा के सदृश अब तक कोई साधु नजर नहीं आये—जहाँ हमारी आस्था बन सके।

5. बाबा के सच्चे सेवक श्री अवध नारायण सिंह जी ग्राम विष्णुपुर (1970)

—श्री अवध बाबू 32 वर्षों तक मौनी बाबा की सेवा में रहे। लेखक को उनसे आत्मीय सम्बन्ध था। जब कभी भी गाँव की यात्रा होती उनसे मिलने अवश्य जाता। जब तक वे चलने फिरने के काबिल रहे—वे मेरे निवास पर आ जाते रहे। उनके आगमन से बड़ा आनन्द मिलता रहा। साक्षात्कार के क्रम में आपने बताया कि बाबा की अनुपस्थिति से असहाय हो गया हूँ। अब भी स्वप्न में बाबा दर्शन देते हैं—जब मैं अधिक चिन्तित रहता हूँ।

—बाबा ने हमें बहुत कुछ दिया। इस संदर्भ में अवध बाबू ने कहा कि बाबा की कृपा से ज्योति दर्शन साधना की शिक्षा एवं अमल में लाने की जानकारी मिली। कोई भी जिज्ञासु व्यक्ति ज्योति दर्शन की शिक्षा मुझसे ले सकते हैं और ज्योति दर्शन होगा।

आपने बताया कि मैं बाबा के बहुत करीब रहा। जहाँ कहीं भी जाते मैं साथ रहता था। मृत्यु के चार दिन पहले बाबा ने मृत्यु की निश्चित तिथि की जानकारी दी थी। समय भी मुझे मालूम था। मैं रोने लगा। बाबा ने लिखा कि मैं शरीर छोड़ रहा हूँ—तुम्हारे दिल में सदा रहूँगा। 'यह मयावी संसार है।' इस संसार में आगे पीछे देखकर अपना कार्य करो। आत्मा पूर्ण और मृत्यु निश्चित है।

◆◆◆

दाह संस्कार के समय रहस्योद्घाटन

मृत्यु के बाद भी लगता था जैसे बाबा अभी-अभी सोये हैं और सुप्तावस्था में भी हँस रहे हैं। चेहरे पर प्रसन्नता। ब्रह्मचारी रहने के कारण अद्भुत कांति। दाह-संस्कार के समय जब बाबा को नहलाया जा रहा था—उस समय लोगों को काफी आश्चर्य हुआ। इन्द्रि में मांस नहीं सिर्फ कवर (Cover) मात्र देखा गया। सभी मांस न जाने योगिक क्रिया के माध्यम से गलाकर बाहर निकाल दिया गया हो। आज तक इस तरह का उदाहरण आँखों के सामने नहीं आया।

लेखक और बाबा

—माननीय बाबा के साथ लेखक का तादात्म्य सम्बन्ध है। लेखक के पिताजी (पं० बालो चौधरी) अपने जमाने के नामी-गिरामी तगड़े पहलवानों में एक थे। दरभंगा महाराज द्वारा संचालित दंगलों में सर्वश्रेष्ठ पहलवान का पुरस्कार कई बार प्राप्त करने का सौभाग्य आपको मिला। और यही कारण था कि महाराजाधिराज आपके भतीजे की नियुक्ति अच्छे ओहदे पर अपने राज्य में की थी। उन्हें मधेपुरा कचहरी का प्रभार दिया गया था। आपका निजी घर ग्राम तेलहर जिला सहरसा था—वैसे, आपका पूर्वज ग्राम बारी (कुशेश्वर स्थान) जिला दरभंगा से आकर बसे थे। घर में सारी सुख-सुविधाएँ थीं लेकिन पुत्र प्राप्ति की चिन्ता बनी रहती थी। एक दिन आपके बहनोई कहरा निवासी पं० चिरंजीव झा तेलहर पहुँचे और आपने अपना मनोभाव उनके समक्ष प्रगट किया। पं० झा ने आपको कहरा कुटी पर चलने का संकेत दिया।

—कालान्तर, आप कहरा कुटी पर आये और बाबा का दर्शन किया। अन्तर्यामी बाबा दिल की बात जान गये और आपने आदेश दिया कि तेलहर गाँव छोड़कर आप कहरा में निवास करें। उस निवास के पहले आप पैदल बाबा बैद्यनाथ धाम देवघर जायँ और पैदल इस कुटी पर आवें। बाबा की वाणी सुनकर आप अपना सर्वस्व छोड़कर लगभग 1918 के पहले ही कहरा चले आये। आने के पहले ही आपने पाँव-पैदल बाबा बैद्यनाथ शिव का दर्शन किया। तेहलर की सम्पत्ति बाबा के आदेशानुसार सदा-सदा के लिये परित्याग कर दिया।

आप श्रद्धा और विश्वास का सम्बल ले—दुसह कठिनाईयों को सहते हुए बाबा की सेवा करते रहे। बाबा के आशीर्वाद एवं असीम अनुकम्पा से लेखक

का जन्म माघी पूर्णिमा तदनुसार 1936 ई० में हुआ। माननीय बाबा ने लेखक की कुण्डली अपने हाथों से तैयार की थी और कुण्डली के अनुसार सारी बातें अक्षरशः सत्य प्रतीत हो रही है और आगे भी पूर्ण होने की संभावना है। बाबा की असीम कृपा लेखक के साथ हर घड़ी रहती है।

◆◆◆

कुटी की डायरी

(क) विद्यालय जब बन रहा था

भवन निर्माण के लिये ईंट का भट्ठा तैयार था–कुछ समय के बाद आग भी दे दी गयी। इधर लोगों की निगाहें ऊपर उठी और सभी चकित हो गये–कारण काफी जोर से बादल उठ रहा था। भक्तों ने बाबा से कहा कि "बाबा भट्ठा में आग लगा दी गयी है लेकिन वर्षा होने की पूर्ण संभावना है–सभी ईंट बर्बाद हो जायगी। बाबा एक बार भट्ठा के चारो तरफ घूम गये–कहा जाता है कि मूसलाधार बारिश हुई लेकिन भट्ठा के ऊपर एक बूँद भी पानी नहीं पड़ा।

– ग्राम खपौती जिला सहरसा के ठाकुर बाबू से 15 हजार ईंट की मंगनी विद्यालय भवन के लिये की गयी। चार नावों पर ईंट लादी गयी। दो नावें नदी पार कर गयी, बाकी दो नावें बीच भंवर में आकर फँस गयी। उस नाव पर श्री अवध नारायण सिंह थे–जिनकी चर्चा पीछे की गयी है और अब जीवित नहीं हैं–हाथ से पतवार छूट गया, सभी घबरा गये। इस सम्बन्ध में श्री सिंह ने बताया कि हमलोग बाबा का ध्यान करने लगे–कुछ देर के बाद एक नवीन पतवार नाव के पास आ लगा और उसी पतवार से दोनों नावें निकाली गयीं। आज भी वह पतवार विद्यालय भवन में है और लोग दर्शन करते हैं।

एक समय छात्रावास बनाने के लिये ईंट का भट्ठा लगा। आग दे दी गयी। आग फूँकने के बाद एक मादा नेवला (बिज्गी) भट्ठा से बाहर आयी और भाग गयी। दूर जाकर भट्टा की ओर झांकने लगी। लोगों ने कहा कि मादा नेवला भट्ठा में बच्चा दिया है–सभी मर जायेंगे। कहा जाता है कि बाबा ने उत्तर दिशा में भट्ठा को अपने हाथों से ठोक दिया। ईंट पक कर तैयार हुई लेकिन उत्तर दिशा की ईंट वैसी रह गयी, उधर आग नहीं जा सकी।

(ख) कुटी का आशीर्वाद

पुत्र की लालसा रखनेवालों को बाबा के आशीर्वाद से पुत्र की प्राप्ति हुई। इसके अनेक उदाहरण हैं। इस छोटी सी पुस्तक में हम एक दो की चर्चा करेंगे। सर्वप्रथम स्वयं लेखक हैं। साथ ही ठाकुर प्रसाद सिंह, धबौली जिनके पुत्र

वैद्यनाथ सिंह (मुखिया), राघोदास महन्थ, जानकी नगर, गंगा प्रसाद सिंह, खपौती, सुरदास जी, घोघनपट्टी जिनके पुत्र दामोदर प्रसाद यादव, ठाकुर प्रसाद सिंह, मदनपुर जिनके पुत्र चक्रधर प्रसाद सिंह, शीतल शुक्ल, सिहपुर की संतान आज भी विद्यमान हैं। कहा जाता है कि बाबा के आशीर्वाद से आये पुत्रों ने मां के गर्भ से नौ माह क बजाय, दस-ग्यारह महीनों में जन्म लिया। एक बार डाक्टरों ने इस रहस्य के बारे में आपसे जानना चाहा। कृपालु बाबा हँस कर टाल दिये।

(ग) विश्वास का फल

घटना 1947-48 की है। लेखक के पिताजी के हाथ में असाध्य घाव हो गया था। दर्द के मारे बेचैन थे। घाव बढ़ता ही जा रहा था। गरीब और असहाय को मदद देने वाले विरले ही कोई होते हैं। एक रात घाव में काफी जलन थी। पिताजी रात भर बाबा को याद करते रहे।

सबेरे अपने गाँव के बाबू ठाकुर प्रसाद सिंह जी आये—जो बाबा के परम भक्त थे। कहने लगे—मुझे तो कोई खबर ही नहीं थी कि आप बीमार हैं। रात में बाबा को आपके लिये कष्ट उठाना पड़ा और उनके ही आदेश पर सबेरे पहुँचा हूँ। घटना लेखक की आँखों के सामने की है। श्री सिंह जी एक जड़ी उखाड़ कर लाये और अपने ही हाथों से पीसकर लगा दिये। जहाँ तक स्मरण है दूबारा दवाई नहीं लगायी गयी और असाध्य घाव पीड़ा से मुक्ति मिली। स्वर्गारोहन होने के बाद भी बाबा ने अपने गरीब भक्त की मदद अपने प्रिय शिष्य के द्वारा सम्पन्न की।

बाबा हर घड़ी अपने को छिपाये रहे, कभी अपनी बड़ाई नहीं की और न आप में कभी घमंड रहा।

(घ) हैजा की शांति

डिस्ट्रिक्ट बोर्ड से सड़क पर की सूखी लकड़ी स्कूल के लिये ली गयी थी। कई दिनों से पड़ी रही और स्कूल में काम लगा था—जहाँ इसकी आवश्यकता थी। रात में हैजा शुरू हुई। भीषण रूप ले लिया। दूसरे गाँवों से लोगों की आवा-जाही बन्द हो गयी—कहरा में हैजा हो रही है। गाँव बासी बाबा की शरण में आये—दुखड़ा सुनाने लगे। बाबा ने स्लेट पर लिखा कि—लकड़ी कई दिनों से सड़क पर रखी हुई है—उसे उठाकर ले आओ। सभी लोग दौड़ पड़े और लकड़ी आ गयी। कहा जाता है कि हैजा शांत हो गयी। इसमें कोई हताहत नहीं हुए।

(च) मिश्री से शनि घाव का आराम हो गया

श्री अवध नारायण सिंह, विष्णुपुर की एक नौ वर्षीय पुत्री की छाती पर घाव हो गया था। कई डाक्टर और वैदों से इलाज की गयी लेकिन कहीं अच्छा नहीं हुआ, अंत में पं० चिरंजीव झा के माध्यम से लड़की बाबा की शरण में आयी। बाबा ने बड़े प्यार से मिश्री का एक टुकड़ा खाने के लिये दिया और उसी से घाव अच्छा हो गया।

(छ) मस्तिष्क का घाव योगिक क्रिया द्वारा पूर्ण आराम

–खजुराहा (सहरसा) के श्री बुद्धिनाथ सिंह जी के पुत्र गोपाल को मस्तिष्क में घाव हो गया था। दरभंगा (लहेरियासराय) एवं पटना में इलाज करके थक गये। डाक्टरों ने जबाब दे दिया। अंत में बाबा की शरण में आये। बाबा ने योगिक क्रिया के माध्यम से घाव को पूर्ण आराम कर दिया। श्री सिंह जी के पुत्र नहर विभाग में ऊँचे पद पर थे।

(ज) आशीर्वाद रुपये से नहीं खरीदा जा सकता

–लाल साहब (राजा सोनवर्षा) का मुकदमा हक सम्बन्धी हाई कोर्ट में चल रहा था और बाबा के आशीर्वाद से विजयी हुए। कहा जाता है कि राजा बहादुर ने चाँदी के पाँच सौ सिक्के बाबा के आगे रखा और लेने का आग्रह किया। बाबा की मुद्रा बदल गयी और आपने लिखकर बताया कि आशीर्वाद रुपये से नहीं खरीदा जा सकता और न हम योग बेचते हैं।

× × ×

–लाल साहब की एक दूसरी कहानी है। स्कूल भवन बन रहा था। राजा हाथी पर चढ़कर रानी के साथ कुटी पर आये और आपने स्कूल भवन निर्माण में योगदान करना चाहा। बाबा ने अस्वीकार कर दिया। आपने स्पष्ट लिखा कि भवन गरीबों की मुठिया अन्न से ही बनेगा। यह गरीब निर्धनों का स्कूल है। इसमें राजा का सहयोग नहीं चाहिये।

(झ) साँप पहरेदार था

–साँप की चर्चा पहले भी की गयी है–इस संदर्भ में आपको मालूम होना चाहिये कि विद्यालय बनने के समय मजदूरों एवं व्यवहार में लाये जाने वाले समानों की देख-रेख साँप करता था। बाबा के द्वारा यह घोषणा कर दी गयी कि

कोई साँप को नहीं मारे। साँप बराबर पहरेदारी का काम करता था। एक बार गाँव के एक व्यक्ति ने रात की अंधेरी में कारीगरों की अनुपस्थिति में लकड़ी का एक टुकड़ा उठाया। कहा जाता है कि साँप उनके दोनों पैरों को अपनी लपेट से बाँध दिया और तब तक बाँधे रहा–जब तक बचाओ-बचाओ की आवाज से दर्शकों की भीड़ लग गयी। लोगों ने भला-बुरा कहा और सर्प कुटी की ओर निकल गया।

(ट) दही और सिन्दूर से टी० बी० की इलाज हुई

–उस समय टी० बी० की कोई इलाज नही थी। मरीज शहरों से निराश होकर बाबा की शरण में आये और कहा जाता है कि बाबा के अधिकृत शिष्य पं० चिरंजीव झा, बाबा का आदेश प्राप्त कर दही और सिन्दूर खिलाकर मरीजों का कल्याण कर देते थे।

(ठ) प्रेत का उद्धार हुआ

कहानी कपसिया गाँव की है। एक सज्जन के घर में प्रेत का प्रकोप था। मरीज को कुटी पर लाया गया। बाबा ने आदेश दिया कि इन्हें एक माह तक सुन्दरकांड रामायण सुना दो। कहा जाता है कि रामायण सुनाने के समय मरीज (प्रेतात्मा के द्वारा) भूत-भविष्य की बातें साफ-साफ कहता था। रामायण समाप्ति के बाद प्रेत ने कहा कि मौनी बाबा ने मेरा उद्धार कर दिया है। एक प्रत्यक्षदर्शी ने बताया कि प्रेत ने घर वालों का बहुत बड़ा उपकार भी किया।

द्रष्टव्य–ग्राम कपसिया में बाबा के एक अनन्य भक्त थे–बाबू जनार्दन प्रसाद सिंह जी जो बाबा के दर्शन में नियमित रूप से आते रहे–जब बाबा काशी प्रवास में होते–भक्त वहाँ भी सत्संग से लाभ लेते। बाबा की असीम कृपा उनपर थी। अब वे इस संसार में नहीं है लेकिन मृत्यु के पहले पटना पता पर लेखक के पास अपनी अनुभूति फोटो के साथ भेजे थे। वे सरल स्वभाव के थे। लेखक को उनका अपार स्नेह मिला। बाबा की चमत्कारिता का बखान करते-करते रोने लगते थे। मैं उनकी साधुता का आभारी हूँ।

5. दो हिंसक जन्तू एक ही जगह निवास करते थे

–साँप और बिल्ली एक ही जगह कुटी में निवास करते थे। बाबा दोनों को अपने हाथों से भोजन कराते थे। वे दोनों प्रेमपूर्वक कुटी की रखवाली करते थे। यह सहज नहीं, एक आश्चर्यजनक है।

(ढ) भोज्य पदार्थ में बृद्धि

—बाबा जिस भोज भंडार में पहुँचते थे, किसी प्रकार की कमी नहीं रहती थी। एक बार बाबा अपने परम भक्त अवध नारायण सिंह जी के निवास विष्णुपुर गये। उनकी मां का श्राद्ध था। कहा जाता है कि कुछ कृपा युक्त ब्राह्मण बाहर से आ गये—जिन्हें निमन्त्रण नहीं था और निमन्त्रित ब्राह्मणों के योग ही भोज्य सामग्री थी। लोगों ने कहा बाबा दही कम जायगा। आदरणीय बाबा भंडारगृह जाकर दही के वर्तन एवं अन्य भोज्य सामग्री को अपने हाथों से छू दिये। कहा जाता है कि बर्त्तन में दही बढ़ने लगा और उसमें से दही निकाल कर कई बर्त्तनों में रखे गये। बाबा की कृपा से ब्राह्मणों ने छक कर भोजन किया।

◆◆◆

अर्न्तयामी बाबा

गंगातट, बिशौनी प्रवास

–एक बार परम भक्त सियाराम मंडल नवान्न आने पर चूड़ा एवं मिट्टी के बड़े बर्त्तन में दही लेकर अपने जनों के साथ कहरा कुटी पर आये। उस समय बाबा बिशौनी प्रवास में थे। मंडल जी ने सोचा कि बिना बाबा को भोजन कराये कैसे अन्न-जल ग्रहण करेंगे ? यह तय कर बिशौनी के लिये प्रस्थान किये।

–उधर विशौनी का हाल सुनिये–भक्त समुदाय ने बाबा से भोजन बनाने का आग्रह किया। बाबा ने कहा कि एक भक्त दो-दिनों से भूखा-प्यासा अपने जनों के साथ आ रहा है–उनको खिलाने के बाद ही मेरा भोजन भोग होगा। दूसरे दिन मंडल जी बिशौनी पहुँचे सभी लोग देखकर चकित रह गये। यह रही पूज्य बाबा की अन्तर्दृष्टि।

–इस संदर्भ में आपको मालूम होगा कि उस समय छूआ-छूत की भावना अधिक थी। बिशौनी के ब्राह्मण भक्तों ने बाबा से कहा कि आप मंडल का अन्न भोग करेंगे। बाबा ने कहा कि साधुओं की कोई जात नहीं होती और बाबा ने अपने भक्त मंडलजी की प्रसादी का ही भोग लगाया।

माननीय बाबा ने बिशौनी के भक्तों को दर्शाया कि 'जन्मना जायते शुद्रः' जन्म से सभी आदमी शूद्र हैं और कर्म से ब्राह्मण बनता है। ब्राह्मण कोई जाति नहीं होती। इसी प्रसंग में शास्त्री कमलाकांत शर्मा जी ने काशी की एक कहानी सुनायी। काशी प्रवास में बाबा ने एक कमार (बढ़ई) को जिनमें ब्रह्मत्व के सारे गुण मौजूद थे–ब्राह्मण का संस्कार दिया। बड़े-बड़े पंडितों ने उनके यहाँ भोजन किया।

बिशौनी में नवल किशोर मिश्र एवं मनोहर मिश्र जी बाबा के अनन्य भक्त थे। ये लोग कहरा-कुटी पर बराबर बाबा के सम्पर्क में बने रहते थे। मिश्र जी के आग्रह पर बाबा, विशौनी जाने लगे और कई माह तक रह जाते थे। बाबा का यह क्रम अन्तिम समय तक बना रहा। आज भी बाबा की तस्वीर सभी घरों में विद्यमान है। इनके प्रति अटूट श्रद्धा-भक्ति और आस्था है।

–बिशौनी निवासी प्रभाकर झा जी, आई० ए० एस० से बाबा के दिव्य स्वरूप का वर्णन सुनने का सुमौका मिला। इनके भाई आलमनगर के विधायक रहे यदुनन्दन झा जी थे। यदु बाबू आजादी की लड़ाई में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया था। अंगरेजी सल्तनत ने इन्हें फाँसी देने की पूर्ण योजना बनायी। इनकी जेल यात्रा हुई। कई मुकदमा में फँसाया गया लेकिन पूज्य बाबा के आशीर्वाद से विजयी हुए।

–प्रभाकर बाबू ने काशी प्रवास का एक प्रसंग सुनाया। बाबा काशी में थे। बिशौनी के अनेक भक्त उनके साथ थे, यदुनन्दन झा जी एवं जनार्दन झा जी विश्वनाथ दर्शन में गये थे। बाबा बहुत प्रसन्न मुद्रा में थे–जैसे ही ये लोग आये– बाबा ने स्लेटपर लिख कि पूजा में ही रहोगे कि केस भी देखोगे। तुम्हारा केस खुल गया है–कल तारीख है। पटना का वकील खोज रहा है। वैसे, केस खुलने में दो माह देर थी–जैसा कि इन लोगों को पूर्व में वकील से ज्ञात हुआ था। लेकिन बाबा का स्पष्ट संकेत पाकर वे लोग पटना आ गये। सही माने में केस खुल गया था और बाबा के आशीर्वाद से यदु बाबू विजयी रहे। प्रभाकर बाबू ने कहा कि बाबा को गाढ़ी निद्रा में नहीं देखे। मालूम पड़ता था कि सदैव जगे हैं और सर्वत्र जग को देख रहे हैं। बाबा पीड़ा हरण थे। पीड़ित जन आये, बाबा के सान्निध्य में रहे–उनकी पीड़ा दूर हुई है।

–प्रभाकर बाबू ने बिशौनी प्रवास की अद्‌भुत जानकारी दी। आपने कहा कि बाबा की कुटिया आम के एक घना बगीचा में थी। एक दिन संध्या सात बजे कुटी पहुँचा। अन्धेरा था। बाबा उस अन्धेरा में कोई पुस्तक देख रहे थे। दीपक नहीं जल रहा था। अन्धेरा में पुस्तक का पढ़ना आश्चर्य सा लगा। श्री झा ने कहा कि मैंने कौतुहलवश बाबा से पूछ बैठा कैसे देख रहे थे ? बाबा ने दीपक जलाने के लिये कहा और आपने सिलेट पर लिखा कि यह प्रसंग किसी से नहीं कहना। बाबा को दिव्य-दृष्टि थी।

–पं० जनार्दन झा जी के पुत्र अरविन्द जी ने बताया कि हमलोग गाँव में एक नाटक खेल रहे थे। अच्छा आयोजन था। आस-पास के गाँव से भी लोग देखने आये थे। कुछ देर के बाद शोर मचने लगा कि बहुत जोर से बादल घिर आया है। वर्षा होगी। हमलोग बगीचा में बाबा के पास गये और समाचार दिया कि इतनी अच्छी तैयारी है लेकिन प्रकृति माता बिगाड़ देना चाहती है–बाबा आप कृपा कीजिये। बाबा हँसने लगे। सिलेट पर लिखे जाओ, नाटक खेलो। विघ्न बाधा टल गयी। नाटक अच्छा रहा। आपको आश्चर्य लगेगा दूर-दूर तक बारिश हुई लेकिन हमलोगों का रंग-मंच बाबा की कृपा से सुरक्षित रहा।

–पं० मनोहर झा जी के पुत्र कृष्ण जी (कृष्ण मोहन मिश्र) ने कहा कि आस-पास के गाँवों में हैजा फैल गयी थी लेकिन बाबा की कृपा से यह गाँव बच गया। उनकी ऐसी महिमा थी बाबा के रहते कोई अप्रिय घटना नहीं हुई। बाबा सबको समान रूप से देखते थे।

–बिशौनी से माननीय बाबा का सम्बन्ध युग-युग से था ऐसा जान पड़ता था। बिशौनी की धरती में बाबा की आत्मा बसी है। जीवन-पर्यन्त बाबा इस माटी से जुड़े रहे। आज भी इस धरती पर पुरानी गाथा विद्यमान हैं। बाबा की सदैव चर्चा होती है। बाबा ने अपने भक्तों को जो चरणामृत दिया था, बीमार पड़ने पर लोग उस जल को औषधि समझते थे और इसे ग्रहण करते रहे–आज भी कई घरों में यह जल विद्यमान है। जब खाली होने पर रहता है इसमें गंगा जल मिला दिया जाता है। बाबा के प्रति कितनी श्रद्धा है–कितना विश्वास हैं–श्रद्धालुओं में।

–श्री कृष्णमोहन मिश्र 'भगवान जी एवं श्री शैलेन्द्र मिश्र जी ने कहा कि जब हमलोग बाबा का स्मरण करते हैं–सच कहते हैं बाबा की अदृश्य शक्ति से समस्याएँ हल हो जाती हैं। हमें आज भी बाबा पर ही एकमात्र भरोसा है। बाबा ही अबलम्ब हैं।

◆◆◆

लेखक की अपनी अनुभूतियाँ

—बाबा की कृपा से हमारा जन्म हुआ। बाबा की कृपा ही हमारा धन और ऐश्वर्य है। वे सदैव ही मार्ग दर्शन करते हैं। उनके मार्ग दर्शन पर ही यह जीवन स्थित है। हम कहाँ से कहाँ आ पहुँचे हैं। बचपन से ही धार्मिक ग्रन्थों के प्रति रुचि रही। आठवीं कक्षा में आने पर—सम्पूर्ण गीता के श्लोक संस्कृत, हिन्दी और अंगरेजी में कंठाग्र रहा। नवीं कक्षा में पहुँचने पर हमने अपने अविभावक जो आगे चलकर गुरु मंत्र दिये, पं० चिरंजीव झा जी को प्रेमसागर, सुखसागर, देवी भागवत कथा, रामायण, महाभारत, योगवाशिष्ठ एवं गरुड़पुराण—उनके ही दिशा-निर्देशन पर सुनाया। छोटी अवस्था में ही हम कथावाचक बन गये। हमें याद है—अंडी तेल का दीपक हमारी माता जी जलाकर रखती थी और उसी दीप के प्रकाश में हम पाठ सुनाते थे। यह क्रम सन्ध्या छः बजे से रात्रि आठ बजे तक बना रहता था। बीच-बीच में पंडित जी व्याख्या भी करते थे। कथा का लाभ लेने प्रायः प्रतिदिन हमारे माता-पिता एवं पं० धीना मिश्र, अवधलाल ठाकुर, दसरथ झा, कुलानंद झा, भैयालाल सिंह, ठाकुर प्रसाद सिंह, मुन्नीलाल कामत और वृहस्पति कामत उपस्थित रहते थे। पंडित जी से इनलोगों का अपार स्नेह था—प्रेम था। बीच-बीच में मौनी बाबा का प्रसंग पंडित जी सुनाने लगते थे।

—अध्यात्म के प्रति गहरी रुचि होना पंडित जी की देन है। धार्मिक ग्रन्थों की कमी नहीं थी। मौनी बाबा की सारी किताबें पंडित जी को ही मिली थी। मरने के पहले ही सारी पुस्तकें बाबा ने इन्हें दे दी थी। गुरु गोरखनाथ का सम्बन्ध कामाख्या धाम, असम से रहा एवं धाम के बारे में विशेष जानकारी पंडित जी सुनाते रहते थे। यदा-कदा कामाख्या माता की चर्चा हो जाया करती थी और यही कारण है—कामाख्या धाम के प्रति बचपन से लगाव बंधा रहा और आज भी तरोताजा है। 1964 से लगातार वर्ष में चार बार शारदीय नवरात्र, वासन्ती नवरात्र, अम्बुवासी एवं दिसम्बर माह के अन्तिम सप्ताह यथा 27 दिसम्बर से तीन जनवरी तक धाम की यात्रा निश्चित है। कभी व्यवधान नहीं रहा। कामाख्या धाम में बिना चंदा उगाही के तीन शत चण्डी यज्ञ भुवनेश्वरी शिखर माला पर किया गया। सभी यज्ञ सफल रहे। प्रथम यज्ञ 1979 में हुआ—इसमें मुख्य रूप से इन्दिरा गाँधी, डॉ० जगन्नाथ मिश्र एवं अनेक धार्मिक संतों ने अपनी उपस्थिति दी। दूसरा यज्ञ 1980 एवं तीसरा यज्ञ 1981 में सम्पन्न हुआ। सभी यज्ञों में डॉ०

जगन्नाथ मिश्र जी मुख्य रूप से भाग लिये। भारत और नेपाल के मूर्धन्य साधु-सन्तों ने अपनी उपस्थिति से गौरवान्वित एवं प्रोत्साहित की। हमारी आस्था और निष्ठा कामाख्या माता में प्रगाढ़ होती रही। यह बाबा की महिमा का ही फल था।

1979, 80 और 81 में पटना की धरती पर महामान्य बाबा की पुण्यतिथि मनायी गयी। बड़ा विशाल कार्यक्रम हुआ। तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ० जगन्नाथ मिश्र, रघुनाथ झा, रामजयपाल सिंह यादव, भीष्म नारायण सिंह, डा० के० के० मंडल, डॉ० मधुकर गंगाधर, रामखेलावन सिंह, इन्दू जी, सूर्यकांत शर्मा विमल एवं अनेक साधु-संतों ने भाग लेकर कार्यक्रमों को सफल बनाया।

बाबा की अद्‌भुत लीला

–हमारी बड़ी कन्या रेखा पटना विश्वविद्यालय से बी० ए० आनर्स (संस्कृत) की परीक्षा दी थी। हमारे सामने विवाह की समस्या रही। सुयोग्य बर घर मिले, कुल शीलवान हो–'सब चाहत अस होय।' दूसरी ओर दहेज–दानव सुरसा सदृश मुँह बाये आँखें निहार रहा है। जिस घर में विवाह योग्य बेटी हो–वहाँ माता-पिता की चिन्तित रहना स्वाभाविक है। कई जगह देखा-देखी हुई लेकिन संयोग नहीं मिला। इसी बीच आकाशवाणी पटना से 15 मिनट का कार्यक्रम मिला। विषय था 'युग-पुरुष मौनी बाबा'। प्रसारण हुआ–लोगों ने सराहा कई लोगों ने शुभकामनाएँ दी। अब देखें बाबा की कृपा। उस समय हाजीपुर के जिलाधीश प्रभाकर झा जी थे–बिशौनी निवासी और मौनी बाबा के अनन्य भक्त जिनकी चर्चा पूर्व में की गयी है। आपने आकाशवाणी से पूज्य बाबा पर आलेख सुना। उन्हें प्रसन्नता हुई और तत्क्षण आकाशवाणी से सम्पर्क कर हमारा पता लिया।

–सबेरे पहर मोटर वोट से झा जी पुनाईचक निवास पर आये। उन्हें अत्यधिक खुशी थी। बाबा का कई संस्मरण सुनाये। साथ में उनकी पत्नी भी थी। बिशौनी प्रवास की बातें चल रही थी–इसी बीच मेरी बेटी चाय लेकर आयी और उभयजनों को प्रणाम किया। झा जी उनसे नाम-गाम पूछने लगे। पढ़ाई-लिखाई की बातें हुई। संस्कृत विषय जानकर झा जी को प्रसन्नता हुई–वे खुद संस्कृत से एम० ए० थे। सर्वप्रथम मधेपुरा कोर्ट से आपने वकालत शुरू की थी। मधेपुरा की धरती से आपका काफी लगाव था। आलमनगर के समीप आपकी जगह-जमीन थी। यहाँ से आपके अग्रज यदुनन्दन झा जी एम० एल० ए० हुए थे।

श्री झा जी ने संस्कृत से एक-दो प्रश्न पूछा–रेखा ने संतोषप्रद जबाब दिया– वे काफी प्रसन्न हुए और झा जी ने प्रस्ताव रखा कि यह कन्या हमें दे दीजिए– लड़का पंजाब नेशनल बैंक में है और गार्जियन धनवाद मेडिकल कॉलेज के प्रो० डॉ० रघुवंश झा जी हैं। चाहें तो हम टेलीफोन कर देते हैं–हमारी बात से कोई दूर नहीं होंगे और शादी ठीक हो गयी। माननीय बाबा ने मेरी बेटी की शादी विशौनी ही करा दी। जहाँ से उनका विशेष प्रेम रहा।

–वर्षों बाद विशौनी जाने का मौका मिला। वहाँ के लोगों में हमारे प्रति बड़ा प्रेम है। इसका एक ही कारण था–बाबा के प्रति हमारा तादात्म्य सम्बन्ध। हमारी प्रबल जिज्ञासा थी–उस पवित्र धरती को नमन करने का जहाँ बाबा निवास करते रहे। इस यात्रा में श्री शैलेन्द्र कुमार मिश्र एवं भगवान जी तथा अनेक गणमान्य व्यक्ति साथ थे। हमलोग वहाँ पहुँचे जहाँ बाबा का स्थान था। वह आम का बगीचा था–गाँव के पूरब तरफ। गंगा की धारा में स्थान समाहित हो गया। आम का बृक्ष साफ हो गया। केवल चार आम्रवृक्ष बाबा की स्मृति को संजोए निर्जन स्थान में धूप-घाम से पीड़ित जन को छाया दे रहा है। बड़ी देर तक हमलोग उस वृक्ष के नीचे अतीत का स्मरण कर रहे थे। सभी बाबा की स्मृति को एक-एक कर दुहरा रहे थे। हमने कहा कि इस स्थल पर बाबा के लिये एक विशाल मंदिर का निर्माण किया जाना चाहिये–उसमें बाबा की प्रतिमा रहे। साथ ही हाते में एक शिव मंदिर भी बने। कुछ दूरी पर दुर्गा मंदिर है ही। सभी लोगों ने स्वर से कहा कि आप जैसा कहें–बाबा के निमित्त हमलोग तैयार हैं।

–बाबा सदैव जनकल्याण में लगे रहे–नि:स्वार्थ भाव से बाबा की असीम कृपा से बड़े धूम-धाम से विवाह सम्पन्न हुआ। जिस विवाह में बाबा की कृपा और अन्नपूर्णा कामाख्या विराजमान हो उसका वर्णन करना ठीक नहीं। यह विवाह 17 जून 1981 को सम्पन्न हुआ। इसी तरह दूसरी लड़की रंजना की शादी भी 8 जून 1983 को की गयी। यह शादी गाँव से हुई। इसमें कई संकट सामने आये लेकिन बाबा ने भक्त के सम्मान की रक्षा की। तीसरी कन्या निवेदिता की शादी में अनेक विघ्न-बाधाएँ सामने आयी लेकिन बाबा के अदृश्य बल ने सभी प्रकार की झंझाबातों से मुक्त रखा। बाबा पल-पल हमारे साथ रहे। हमारी भावनाओं एवं चाहनाओं को बाबा श्री ने मूर्त्त रूप दिया।

◆◆◆

–बाबा की स्मृति सदैव बनी रहे, ऐसा ठोस कार्य होना चाहिये। आज भी कहरा-कुटी की मिट्टी अध्यात्म का सही मार्ग दर्शन करना चाह रही है। हमारा ध्यान उधर जाना चाहिये। आना-जाना नियति है–प्रकृति का एक खेल है। सभी अपने परिवारों की समृद्धि चाहते हैं, उन्नति चाहते हैं। अपनी ओर देखते-दूसरों की चिन्ता नहीं। धन कमाना ही जीवन नहीं। धन का उपयोग ही जीवन की सार्थकता है, पहचान है।

–मौनी बाबा को हम सभी जानते और अब भी जान रहे हैं। प्रश्न है सीधा-साधा हमने बाबा के लिये अब तक क्या किया ? वे किसी खास परिवार से बंधे नहीं थे, वरन् समष्टि सूचक थे। परोपकाराय पुण्याय के पोषक थे। गाँव से बाहर उनकी कुटी। मोह ममत्व से दूर। फिर भी दुखी जनों की पीड़ा से दूर नहीं। इस कुटी की अपनी गरिमा और महिमा रही। इस कुटी में देश प्रेम का सच्चा सूपत है। आजादी का क्रान्तिदूत, अध्यात्म का देवदूत, भारतीय संस्कृति और सभ्यता का गौरव पुरुष दूर-दूर तक इस कुटी की जानकारी रही। अपार भीड़ बनी रहती थी। आज सुनसान नजर आता है। बाबा की मृत्यु 1945 में हुई। इस लम्बी अवधि में आश्रम का एक भव्य और आकर्षक स्वरूप होता। हमारा ध्यान इस ओर नहीं गया। बाबा द्वारा निर्मित स्कूल से ज्ञान पाकर अपने जीवन को संवारा लेकिन जहाँ से बुनियाद शुरु हुई–उस ओर झांकने का मौका नहीं मिला और न ऐसी सोच ही हृदय में आयी। चक्रानुक्रमेण समय जाता रहा।

–हमारी धारणा रही, अच्छा आश्रम बने, समय-समय पर आध्यात्मिक कार्यक्रम हो। खास कर बाबा की पुण्यतिथि पर विशेष कार्यक्रमों का आयोजन होता रहे। ऐसे अवसर पर साधु-संतों का समागम हो–उनके प्रवचनों का लाभ श्रद्धालुओं को मिले।

–1982 में हमारे यहाँ बेतिया निवासी श्री कृष्णमोहन पाण्डेय सदस्य विधान सभा आये। पुत्रों का उपनयन संस्कार था। पाण्डेय जी बहुत बड़े जमींदार ~~थे~~ और धर्मनिष्ठ थे। उनकी ही कृपा से गाँव में हेल्थ सेंटर आया था। हमारे आग्रहपर मौनी बाबा की कुटी पर गये। कुटी का दर्शन किया। उनकी इच्छा हुई हम कुटी का निर्माण करना चाहते हैं–आप लोग मार्ग दर्शन दें–उस समय उनके

साथ श्री सहदेव मिश्रजी थे। श्री मिश्रजी ने कहा कि बाबा हमारे खान-दान के हैं, कुटी निर्माण का हक हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। हमलोग इसे बनायेंगे।

–मौनी बाबा का जिस जगह दाह संस्कार हुआ, उसी स्थल पर श्रीमती विन्ध्यवासनी देवी पत्नी पं० शीलानाथ मिश्र कहरा ने मंदिर निर्माण का कार्य 1946 में प्रारम्भ किया। नींव से ऊपर लगभग तीन फीट बनकर तैयार हुआ लेकिन अकस्मात विन्ध्यवासिनी देवी जी का देहावसान लगभग 1947 में होने के फलस्वरूप मंदिर निर्माण का संकल्प अधूरा रह गया। यह कार्य सम्पन्न होना चाहिये ताकि दिवंगत आत्मा को शांति मिल सके।

–कुटी निर्माण का दायित्व पं० ताराकांत झा जी के ऊपर था। कहरा ग्राम वासियों के बीच दिनांक 9 मार्च, 1970 को शिवरात्रि के पावन पुनीत अवसर पर आयोजित सत्संग समारोह में जिनका सभापतित्व पं० महिधर झा जी ने किया था, श्री तारा बाबू ने वचन दिया कि मार्च 1971 तक कुटी बनकर तैयार हो जायगी।

–बाद में कुटी के निर्माण कार्य को मूर्त्तरूप प्रदान किया तारा बाबू के पुत्र द्वय ने अर्थात श्रीकांत और ललन के सदप्रयास से कुटी बनकर तैयार है–जैसा है जिस रूप में है–हमारी एक धरोहर है। बाबा की सम्पत्ति के यही उत्तराधिकारी भी हैं।

–हमारी प्रबल मनसा रही, बाबा की कुटी एक तीर्थधाम बने। बाबा साधु और संत ही नहीं थे, एक युगनायक थे जिन्होंने अपना सारा जीवन जनहित में लगा दिया। वे दीन-अनाथों के मसीहा थे। वे अपने देश को स्वतंत्र देखना चाहते थे और इस दिशा में आजीवन अग्रसर रहे। बाबा के सामने सबसे बड़ी पूजा 'तीरथ राज समाज सुकर्मा'–समाज में रहकर सुकर्म करना। यही सबसे बड़ी पूजा है। जननी जन्मभूमि की रक्षा करना हमारा धर्म है। बाबा की अपनी बाणी रही।

–इस दिशा में हम प्रयत्नशील हुए। एक बड़ा आयोजन करने का संकल्प लिया–सपना देखा। जगह-जगह सम्पर्क किया। दो शंकराचार्यों ने आने की अपनी स्वीकृति दी। मुख्यमंत्री जगन्नाथ जी से भाग लेने का आग्रह किया–वे तैयार हो गये। कई हितैषी व्यय भार वहन करने का पूर्ण आश्वासन दिया। हमारी तैयारी शुरू हुई। बाबा के वंशजों को जानकारी हो गयी। हमारे ऊपर दबाव बढ़ने लगा। हमें चेतावनी मिलने लगी। बाबा के उत्तराधिकारी का एक कड़ा पत्र मिला–जो अबतक सुरक्षित है। उनलोगों के दिमाग में ऐसा घर कर गया कि अब

कुटी पर ही अधिकार कर लेंगे। इस दिशा में कमजोर मानसिकता रही। फल हुआ यह कार्यक्रम पटना की धरती पर हुआ। हिन्दुस्तान दैनिक में बाबा की जीवनी प्रकाशित हुई। आकाशवाणी से बाबा का जीवन चरित्र प्रसारित हुआ। सभी समाचार पत्रों ने प्रमुखता के साथ कार्यक्रमों को छापा। मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र जी और भारत सरकार के मंत्री केदार पांडये जी भी भाग लिये। कई साधु-संतों का अपार स्नेह मिला। इस कार्यक्रम में सुखासन के मुखिया श्री नारायण सिंह जी एवं स्वतंत्रता सेनानी बाबू शिवाधीन सिंह जी ने भी सहभागिता दी। कुटी का धरातल सुनसान रहा।

—साधु-संतों की कोई जात नहीं होती। वे सबके अपने हैं उनका कोई संग-सम्बन्धी नहीं होता। सारा जग कुटुम्ब बन जाता है। बाबा पर सबका समान अधिकार है। इस बात को व्यवधान करने वालों ने स्वीकार किया। कहरा वासी को इस बात पर गर्व होना चाहिये—बाबा हमारे हैं। हमारे कुल-खानदान से ऐसे दिव्यपुरुष आये। खानदान वालों के लिये गर्व होना चाहिये। हम ऐसे खानदान के हैं जहाँ युग पुरुष मौनी बाबा आये—जिनकी कृति पताका से हमारा मानस गौरवान्वित है।

—बाबा की एक तस्वीर थी—कुटी में। उसी तस्वीर पर माताएँ जल उड़ेल देती थीं, तस्वीर का रंग धूमिल पड़ने लगा। उस तस्वीर की प्राप्ति तारा बाबू से हुई। तारा बाबू बड़े सरल स्वभाव के थे और मुझसे बड़ी घनिष्ठता थी—प्रेम था। जबतक हमारे पिताजी जीवित रहे तारा बाबू अवकाश के दिन रविवार को पिताजी के पास एवं पं० चिरंजीव झा जी से अवश्य मिलते। उनका चरणस्पर्श कर आशीर्वाद लेते और घंटों बाबा के सम्बन्ध में बातें होती। आपको जानकारी होनी चाहिये कि हमारे पिताजी को चरण सेवा का अधिकार था। पिताजी उनको स्नान कराते। कपड़ा धोकर फैलाते। बाबा के पीने का पानी पिताजी ही लाते थे।

—तारा बाबू से प्राप्त धूमिल तस्वीर को मुजफ्फरपुर के एक अच्छे कलाकार से बनवाकर पुनः स्टूडियो से अच्छी तस्वीर निकलवायी। एक बड़ी तस्वीर फ्रेम लगवाकर तारा बाबू को दी गयी, एक तस्वीर श्री बीरभद्र मिश्र जी लिये एवं हजारों तस्वीर ब्लॉक वाला ग्रामवासियों एवं श्रद्धालुओं में बाँटी गयी। ताकि बाबा का स्मरण किया जा सके। तारा बाबू अपनी पत्नी के साथ 1966 में भागलपुर पहुँचे। उस समय हम भागलपुर में कार्यरत थे। तारा बाबू के आग्रह पर ही हम मेंही दासजी के आश्रम कुप्पा घाट पहुँचे। महर्षि जी का दर्शन लाभ हुआ। तारा

बाबू घूमघाम कर आश्रम को देखा। एक बहुत बड़ा ओम से आश्रम का सत्संग सुसज्जित था। तारा बाबू की महती इच्छा थी कि मौनी बाबा का ऐसा आश्रम बने जो दर्शनीय और वंदनीय हो। वे जिला परिषद में इंजीनियरिंग सेल में थे—एक सुयोग्य इंजीनियर से उन्होंने कुटी का नक्शा बनवाया। नक्शा के साथ तारा बाबू सियाराम मंडल से मिले और उनसे आग्रह किया कि ऐसा ही मैप रहे। हमें सियाराम बाबू से ही यह मालूम हुआ कि ताराकांत जी आये थे और कुटी निर्माण के लिये सहयोग चाह रहे थे।

—बाबा की कुटी तीर्थ सदृश है। इस तीर्थ धाम के प्रति हमारा समर्पण ही सच्ची पूजा है। पुजारी वह जिनको पूजा के प्रति अनुराग हो। लालसा और जिज्ञासा हो।

◆◆◆

कुटी का क्षेत्रीय भूमंडल

–कोशी की विभीषिका से यह भूभाग सदा उत्पीड़ित रहा। आजादी के बाद भी यहाँ सरकार द्वारा कोई विकास कार्य नहीं हुआ–सदैव, उपेक्षित ही रहा है। कोशी की विनाश लीला एवं कठोर और दुसह यातनाओं को सहते हुए भी यह भूभाग अपनी संस्कृति की रक्षा करने में आगे रहा है। मौनी बाबा की असीम कृपा से–मिड्ल इंगलिश स्कूल की स्थापना से इस क्षेत्र का सम्यक् विकास हुआ।

–धबौली जमींदारों की बस्ती कही जाती है। अंगरेजी सल्तनत में जमींदारों ने जो अत्याचार किये वैसे, जमींदारों की नामावली में इनके नाम नहीं लिखे जायेंगे। इन लोगों ने अपनी मर्यादा और संस्कृति की सदैव रक्षा की है। धबौली के सबसे बड़े जमींदारों की नामावली में बाबू प्रदीप नारायण सिंह जी का नाम आता है। इन्होंने अपनी सरलता और सौम्यता का परिचय लोगों के सामने रखा है। आपने अपने क्षेत्र में माध्यमिक एवं उच्च विद्यालय की स्थापना कर शिक्षा के प्रचार और प्रसार पर बल दिया। इसलिये आज भी आपके घरों में लक्ष्मी और सरस्वती की कृपा है।

–सांस्कृतिक कार्यक्रमों में धबौली ग्राम ने जो अपने उच्च आदर्शों का इतिहास बनाया है–प्रशंसनीय है। यहाँ की नाट्यकला भारतवर्ष में विख्यात रही। भारतीय नाट्य साहित्य के इतिहास में केदार थियट्रीकल कम्पनी को प्रमुख स्थान मिलना चाहिये। यह कम्पनी उस समय सुदूर देहातों एवं अरबन क्षेत्रों में अपना कार्यक्रम दे रही थी। जिस समय दक्षिण भारत में पृथ्वीराज थियट्रीकल कम्पनी उत्तर पश्चिम में पारसी रंगमंच अपना काम कर रही थी–उस समय भारत के उत्तरी पूर्वी भागों में 'केदार थियट्रीकल कम्पनी'* ने अपने अभिनय एवं कला का अनोखा इतिहास बनाया। भारतीय नाट्य साहित्य के इतिहास में इसका उल्लेख है। *भ्रामकतथ्य। दृष्टव्य - अ० 'चौरंगी' - विमलमित्र.

राजनैतिक क्रांति के समय यह इलाका अपनी बीरता और शौर्य का परिचय देने में पीछे नहीं रहा। इतिहास के पन्नों में नीचे लिखे व्यक्तियों का नाम आना चाहिये–जिन्होंने अंगरेजी सल्तनत को मुँहतोड़ जबाब दिया। इसमें कहरा से महामान्य मौनी बाबा, धबौली से बाबू झुनकू प्रसाद सिंह एवं श्री परशुराम सिंह,

सुखासन से श्री शिवाधीन प्रसाद सिंह, श्री कुंज बिहारी लाल दास (सपली) एवं श्री मुरलीधर प्रसाद सिंह एवं विष्णुपुर से श्री अवध नारायण सिंह ।

संस्कृत साहित्य के अध्ययन में इस भूभाग ने सदा से अपना गौरव कायम रखा–सर्व श्री मौनी बाबा, सरकार अर्जुन दास, पं० गेनालाल ज्योतिषी, पं० क्षमानाथ मिश्र, पं० चिरजीव झा, पं० कमलाकांत शासत्री जी का नाम क्षेत्रीय इतिहास में सदा अमर रहेगा। आपको जानकारी होनी चाहिये कि जयपुर (राजस्थान) नरेश के दरबार में मिथिला के पंडितों को विशेष आदर-सम्मान दिया जाता था। शास्त्रार्थ में अन्य प्रान्तों के पंडितों से ये वरिष्ठ समझे जाते थे। इनमें कई ऐसे हैं–इस क्षेत्र के जिन्हें महाराजाधिराज के द्वारा पारिश्रमिक एवं उचित सम्मान प्राप्त हुआ।

सर्वप्रथम पं० गेनालाल ज्योतिषी (1918)
महामान्य मौनी बाबा (1923)
पं० क्षमानाथ मिश्र (1933)
पं० कमलाकांत शास्त्री (1936) जीवन पर्यन्त राजदरबार से जुड़े रहे ।
पं० कुशेश्वर मिश्र जी तबला (1967)

योग साधना में परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी के बाद कोशी क्षेत्र के इतिहास में माननीय मौनी बाबा (कहरा) एवं सरकार अर्जुन दास जी महाराज (धबौली) का नाम प्रातःस्मरणीय है।

–सुखासन के प्रसिद्ध तबल वादक स्व० पं० कुशेश्वर मिश्र जी जिन्होंने अपनी कला का प्रदर्शन अखिल भारतीय रंगमंच से कई बार किया।

–पं० अर्जुन झा जी का नाम स्वर साधक में सदैव स्मरण किया जायगा। ये धबौली ग्राम के निवासी थे। इसी ग्राम में हिन्दी और मैथिली साहित्य के उदीयमान लेखक, कवि एवं समालोचक पं० सदानन्द झा शास्त्री जी थे। वे असमय इस असार संसार को छोड़कर चले गये। उनकी प्रकाशित एवं अप्रकाशित पुस्तकों को प्रकाश में लाने की आवश्यकता रही।

भारत पाक युद्ध में कोशी प्रमण्डल एवं बिहार का प्रथम जल सैनिक कहरा निवासी चि० अनिल कुमार झा को हम नहीं भूल सकते जिन्होंने 9 दिसम्बर 1971 को अपनी जन्मभूमि की रक्षा करने में वीरगति को प्राप्त की। स्व० झा भारतीय सुखरी जलपोत पर थे–जिसे पाकिस्तानियों ने ध्वस्त कर दिया। उनकी समाधि अरब सागर में ही हो गयी।

समानान्तर रेखाएँ–समानान्तर रेखाओं के माध्यम से क्षेत्र में बसने वाले नागरिकों का एक बहुत बड़ा कर्त्तव्य होता है–अपने क्षेत्र के विशिष्ठ व्यक्तियों को चाहे वे आध्यात्मवादी हों या राजनैतिक पुजारी, विद्वान हो या कलार्थी उनको आदर प्रदान करना चाहिये ताकि उनकी स्मृति सदा-सदा के लिये मानस पटल पर अंकित रहे एवं आने वाली पीढ़ियों का सच्चा मार्ग दर्शन हो सके।

–सम्यक विवेचन के आधार पर हम दक्षिण भारत की चर्चा आपके सामने रख रहे हैं। 1969 में सहकारी बैंकों का विशिष्ठ अध्ययन करने के लिये दक्षिण भारत जाने का मौका हमें मिला। इस संदर्भ में एक दो उदाहरण महाराष्ट्र के देहाती क्षेत्रों के हैं जो आपके लिये द्रष्टव्य हैं।

(क) जगह-जगह आजादी के सच्चे सपूतों की प्रतिमाएँ हैं जिसका निर्माण उस भूभाग में बसने वाले नागरिकों ने अपने श्रम से उपार्जित पैसों को बचाकर किया है।

–साहित्यकार, समाजसेवी, संगीतज्ञ, अभिनय कलार्थी एवं अन्य धर्मानुरागियों की यादगारी में सम्बन्धित संस्थाओं का निर्माण हुआ है। सफल संचालन के लिय जगह-जगह संचालक मंडल है। इस क्रम में आपको बता देना चाहते हैं कि कोई भी राज्य नेता अथवा केन्द्रीय नेता जो भी अपने भ्रमण के सिलसिले में उस क्षेत्र में पदार्पण करते हैं–सर्वप्रथम उस जगह माल्यार्पण करते हैं जिनकी स्मृति में क्षेत्रीय जनता ने अपनी सद्भावना व्यक्त की है। प्रतिवर्ष निश्चित अवधि पर एक वार्षिक अधिवेशन विशिष्ठ जनों के सम्मान में किया जाता है।

?–मौनी बाबा के ही सदृश साईं बाबा का आश्रम शिरडी (अहमदनगर) में है–जहाँ, क्षेत्रीय जनमानस ने इस आश्रम को विश्व के मानचित्र पर ला दिया है। आश्रम का अपना मेडिकल कॉलेज, इंजीनियरिंग कॉलेज एवं लड़के और लड़कियों के लिये स्कूल एवं कॉलेज है। हमारे बिहार के श्री बिन्देश्वर पाठक जी पद्मभूषण, संस्थापक सुलभ इन्टरनेशनल के शिरडी आने वाले श्रद्धालुओं के लिये विश्व का सबसे बड़ा शौचालय और स्नान गृह का निर्माण करवाया है। पाँच हजार व्यक्ति एक बार में शौचालय एवं स्नान गृह का उपयोग कर सकते हैं।

एक संकेत–हमारे समाज के पढ़े लिखे लोगों में अध्यात्म की कमी आ गयी है और इसका मखौल उड़ाया जा रहा है। आज संसार ऐश्वर्य और वैभव का परित्याग कर भारत आ रहे हैं। अगर आपको भ्रमण का शौक है तो काशी, वृन्दावन, मथुरा, हरद्वार, ऋषिकेश, पांडीचेरी और शांतिनिकेतन आदि स्थानों में

इनकी संख्या देखी जा सकती है। उनका कहना है—मानना है भारत की मिट्टी में शांति छिपी है। सदा से भारत धर्म प्रधान रहा है। वर्षों से ये लोग उक्त स्थानों में साधु-संतों की सेवा में लगे हैं। खासकर कृष्ण भक्तों की संख्या अधिक है। कृष्ण में इनकी बड़ी आस्था है। विश्व के अनेक देशों में कृष्ण मंदिर है। इनकी संस्था इस्कोन है।

—इसी संदर्भ में आपको मालूम होना चाहिये कि मौनी बाबा की छत्र-छाया में काशी प्रवास के समय बहुत से अंगरेज अपनी मनोकामना लेकर आते रहे और उन्हें फलाशा भी मिली। अंगरेजों की टूटी-फूटी हिन्दी से बाबा काफी प्रसन्न होते थे, कहा जाता है कि बाबा के आशीर्वाद से कितने अंगरेजों को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई एवं असाध्य रोगों से छुटकारा भी मिला।

विवेचन के आधार पर अन्य देशों से विद्वान लोग आकर पुराने पद चिह्नों को अपने शोध कार्यों के द्वारा हमारे बीच रख रहे हैं लेकिन हमारा मानस भ्रमजाल में पड़कर उससे कोसों दूर है। हमारा जनजीवन अतृप्ति, अशांति एवं विघ्न बाधाओं से संत्रस्त है। इसलिये पढ़े-लिखे लोगों से अध्यात्म का आह्वान है—अपनी संस्कृति और सभ्यता को हृदय में स्थापित करें। अतीत का मार्गदर्शन लें। आध्यात्मिक जीवन में ही तृप्ति है, शांति है। कर्म और धर्म की सही पहचान है।

कुटी का अपना परिसर

आँखों देखी बात है—कुटी परिसर में एक कटहल का पेड़ था जो सदाबहार था और यह आश्चर्य था कि वर्ष भर इसमें फल लगे रहते थे।

आम का फल मौसम आने पर लगता। लेकिन बिना मौसम भी आम वृक्ष में देखे गये।

◆◆◆

श्री श्री गोस्वामी लक्ष्मीनाथ परमहस

परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी

—परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी जी एक सिद्धस्थ संत थे। उनमें अलौकिक प्रतिभा थी। आठों सिद्धियाँ यथा अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमना, प्राप्ति, प्राकाम्य, वशीत्व एवं ईशित्व पर उनका समान अधिकार था। उनका अवतरण मध्य मिथिला में हुआ—जब भारत पर अंगरेजी शासन था।

—यह मध्य मिथिला भागलपुर जिला का उत्तरी भूभाग जिसके अन्दर दो सबडिवीजन आते थे मधेपुरा और सुपौल। परमहंस जी का जन्म परसरमा नाम के गाँव में विक्रम संवत् 1850 एवं अंगरेजी सन् 1793 में हुआ था। यह स्थान सुपौल सबडिवीजन में है। इनके पिताजी पं० बच्चा झा थे।

—बाद 1953 में भागलपुर से यह भू-भाग अलग होकर सहरसा जिला एवं कालक्रम से सहरसा कोशी प्रमण्डल का मुख्यालय बना। इसके अन्दर तीन जिला बनाये गये सहरसा, मधेपुरा और सुपौल। परमहंस जी का अधिकांश समय ग्राम बनगाँव में व्यतीत हुआ—जो सहरसा जिला का भाग है। यह आपकी साधना स्थली रही। लोगों का अपार स्नेह आपको मिला। सभी आपको बाबा जी कहते थे। ग्रामवासियों ने कुटी का निर्माण किया जहाँ आप विराजते रहे। आपका सान्निध्य सबके लिये सहारा बन गया। आपकी ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी। आपकी कुटी तीर्थ धाम हो गयी। दूर-दूर से पीड़ित जन आपकी शरण में आने लगे। बाबा परोपकारी थे। 'बहुजन हिताय-बहुजन सुखाय' हेतु आपका जीवन अर्पित था।

—बाबा का आगमन ऐसे समय में हुआ—जब यह भूभाग कोशी एवं अन्य सहायक नदियों से त्रस्त था। आवागमन का साधन पैदल एवं नदी पार करने के लिये नाव थी। एक गाँव से दूसरे गाँव जाने के लिये बैलगाड़ी, घोड़ा एवं पालकी का अबलम्ब। रेलगाड़ी का परिचालन नहीं हो पाया था। संचार का साधन-डाकिया पर निर्भर था एक जगह से दूसरी जगह चिट्ठी जाने में काफी समय लगत था।

पाठशालाओं की भी कमी थी। दूसरी ओर आर्थिक तंगी। बाढ़ का नग्न-नर्त्तन। उचित शिक्षा-दीक्षा देने में अविभावक असमर्थ थे। सम्पन्न व्यक्ति ही अपने बच्चों को बाहर भेज पाते थे। फिर भी आपके पिताजी ग्रामीण पाठशाला

की पढ़ाई पूर्ण करा कर आपको महिनाथपुर के महान साधक पंडित रत्ते झा के पास भेजा। वे ज्योतिष और तंत्र के पूर्ण ज्ञाता थे। आपने ज्योतिष और तंत्र की पढ़ाई की। आपका मन सदा उचाट बना रहता था। उन्हें तो विशेष पाने की चाहना थी। इस दिशा में वे आगे बढ़ने लगे। कभी-कभी गहरे ध्यान में रम जाते थे। खाने-पीने की सुध-बुध भी नहीं रहती। आपको उदास देखकर पिताजी ने ब्याह कर दिया लेकिन आप इस बंधन में बंधे नहीं रह पाये। एक दिन सांसारिकता से दूर होकर शिव मंदिर सिद्धेश्वर स्थान (मधेपुरा) आ गये। उस समय एक से एक दिव्य साधु मंदिर परिसर में रहकर भोलेनाथ की उपासना करते थे। खासकर शिवरात्रि के सुअवसर पर साधुओं की अपार भीड़ होती थी और देश के कोने-कोने से योग्य साधुओं का आगमन होता था। कहा जाता है कि मंदिर के उत्तर-पूर्व दिशा में परवाने नदी के तट पर चिता भूमि थी, जिस चिता भूमि पर साधना करने से भोलेनाथ की कृपा मिलती थी। कालक्रम से उसी चिता भूमि पर पार्वती जी का मंदिर बना जो आज आपके सामने है।

–साधु संगति में आप बहुत दिनों तक रहे। कई विशिष्ट साधुओं की दृष्टि आप पर पड़ी। वे जान गये कि आप में पूर्व जन्म का संस्कार है। आपके लिये प्राप्ति सरल और सुगम है। इस प्राप्ति के लिये मार्ग दर्शन चाहिये और इसके लिये सद्गुरु का होना आवश्यक है। आप इसी लालसा से सिंहेश्वर में रहे क्योंकि आपको जानकारी थी कि नाथ सम्प्रदाय के दोनों पंथी–यथा दक्षिणी और बाम पंथी औघड़ भी यहाँ आते हैं। इसमें कई अति सुयोग्य हैं। मैगरी में सिंहेश्वरनाथ ही ऐसा मंदिर है जहाँ सभी साधुओं को सम्मान और माता अन्नपूर्णा की अहैतुकी कृपा से भोजन मिलता है। भोजन और ठहराव दोनों का समुचित प्रबन्ध है। ऐसी व्यवस्था अन्यत्र शिव मंदिरों में नहीं देखी जाती है।

–दक्षिणपंथीनाथ सम्प्रदाय में शिष्टता और अनुशासन था। इसमें मत्स्येन्द्रनाथ और गोरखनाथ जी आदि का विशेष नाम था। बामपंथी में कई नाम सामने आ गये थे–जिनमें काशी के कीना राम एवं नेपाल के रामनाथ अघौर का पूर्वज–जिन्हें नेपाल का राजगुरु माना जाता था। आप वैराग्य पंथ के अनुयायी दक्षिण पंथी में अपनी आस्था रखते थे और इसी पथ के अनुयायी बने। कहा जाता है कि एक त्रिकालज्ञ औधर पंथी ने आपके मनोभाव को जानकर नेपाल जाने का संकेत दिया। पैदल चलते-चलते, जंगल और नदियों को पार करते–उस पहाड़ी तक पहुँच गये–जैसा, संकेत औघड़ ने दिया था और भूतभावन औघरदानी भोलेनाथ की असीम कृपा थी–लम्बानाथ जी का दर्शन हो गया जो गोरखनाथ गुरु परम्परा से बंधे थे। आपके मानस को देखकर ही लम्बानाथ जी ने आपका मार्ग दर्शन

किया एवं अपने गुरुओं से भी आशीर्वाद पाने का मौका दिया।

–सद्भक्तों को भक्ति और शक्ति मिलने में देर नहीं होती। भक्त में संकल्प और व्रत अनुपालन की दृढ़ इच्छा शक्ति हो। आप में धैर्य, साहस और वल का दैवीय संबल था। पूर्वजन्म की अर्जित निधि थी और यही कारण रहा दुर्गम पथ पर दृढ़ता के साथ आगे बढ़ते रहे। आप बहुत दिनों तक नेपाल में रहे और गुरु का निर्देश पाकर जगह-जगह का भ्रमण करते कोशी क्षेत्र आये। सर्वप्रथम आपने जन्म स्थान का दर्शन किया। पुन: सिंहेश्वर आये और यहीं से आपने लोक जीवन के कल्याणार्थ एवं अध्यात्मिकता के प्रचार और प्रसार में अपने जीवन को अर्पित कर दिया।

–वनगाँव वासी की साधुता को देखकर आपने अपना अधिक समय यहाँ के जनमानस को दिया। आप सबको 'सरबा' कहते थे–जो प्यार और दुलार का सम्बोधन है। वनगाँव की धरती धन्य है जहाँ ऐसे बिलक्षण संत ने अपनी उपस्थिति दे कृतार्थ किया। इनमें किसी प्रकार का भेद-भाव नहीं था। समान दृष्टिकोण रहा। यहाँ लोगों से इतना प्रेम था कि कभी कोई अलग होना नहीं चाहता और अपनी आँखों के सामने बाबाजी को देखना चाहते थे। और यही कारण था–आपने अपना शरीर त्याग यहाँ नहीं किया। आप फटकी चले गये जो दरभंगा जिला में स्थित है। बाबा के अलौकिक चमत्कार देखने का सुमौका भक्तों को मिला। वे आजीवन कल्याण करते रहे। निरीह मानवता की सेवा में लगे रहे।

–आप में सभी गुणों का समागम रहा। आप योगी, महात्मा, साधु, साधक और संत थे। सरस्वती की महती कृपा थी। आपका भजन अति लोकप्रिय रहा। सभी देवी-देवताओं को आपने हृदय में स्थान दिया। एक ओर राम का चरित्र तो दूसरी ओर कृष्ण की अद्भुत झाँकी और लीला का सजीव चित्रण प्रस्तुत कर लोक जीवन के सोलहो संस्कारों को अपने भजन में बांध दिया। आप स्वयं भजन को गाते थे और भजन मंडली भी अपने स्वर ताल में बाँध कर जनजीवन को मुग्ध कर देते थे। आपकी 'गुरु वन्दना' अद्वितीय है। 'गुरु सकल उपचारा' और गुरु सकल संसारा' की अभिव्यक्ति दे जो उद्गार आपने व्यक्त किया है–संत साहित्य में अन्यत्र दुर्लभ है। आपका सभी भजन बीज मंत्र है। इससे त्रिविध ताप दैहिक, दैविक और भौतिक दूर होते हैं। इसका प्रयोग कई बार भक्तों ने किया है। रोगों के निदान के लिये उपचार की प्रमुखता है। बगैर, उपचार के निदान संभव नहीं है। उसी प्रकार मानस रोगों का निदान औषधियों के सेवन से नहीं– इसमें गुरु का उपचार चाहिये। इस मलीनता को गुरु ही दूर कर सकते हैं। दूसरी ओर हमारी आसक्ति, आस्था और विश्वास की दृढ़ता देखी जाती। शरणागति को

यह लाभ मिलता है। इन्हें ही गुरु की कृपा और सन्निध्यता मिलती है। नीचे गुरु वंदना का लाभ लें–

प्रथम देव गुरुदेव जगत में और न दूजो देवा।
गुरु पूजे सब देवन पूजे, गुरु सेवा सब सेवा॥
गुरु ईष्ट गुरु मंत्र देवता, गुरु सकल उपचारा।
गुरु मंत्र गुरु तंत्र गुरु हैं, गुरु सकल संसारा॥
गुरु आह्वान ध्यान गुरु हैं, गुरु पंच विधि पूजा।
गुरु पद हव्य कव्य गुरु पावक सकल वेद गुरु दूजा॥
गुरु होता गुरु याग महा यशु गुरुभागवत ईशा।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु सदाशिव, इन्द्र वरुण दिगधीशा॥
बिनु गुरु जप तप दान व्यर्थ व्रत तीरथ फल नहिं दाता।
'लछमीपति 'नहिं सिद्ध गुरु बिनु वृथा जीव जग जाता॥

–हमारी चार अवस्थाएँ होती है–ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ एवं संन्यास। ब्रह्मचर्य ज्ञान अर्जन, गार्हस्थ उपार्जन, वानप्रस्थ निवृत्ति एवं संन्यास त्याग का स्वरूप है। जीवन की उपयोगिता में ममता बाधक है। यह ममता प्रभु चिन्तन से एवं प्रभु के नाम स्मरण और भजन से दूर होती है। अन्यथा ममता मिटने वाली नहीं है। यह जीवन को निष्प्राण कर देती है।

ममता गई न मेरे तन से।

जैसे शशि मंडल विच स्याही, छुटत न कोटि जतन से॥
पाके केश सदा के साथी, ज्योति गइ नयनन से।
सुनत न श्रवण वचन काहू के, बल गये इंद्रिय गण से॥
टूटे दशन बचन नहिं आवे, शोभा गई मुखन से।
पगु थाके कर कांपन लागे, लाज गई आंखन से॥
तदपि न जात आस जीवन के, लोभ पराये धन से।
लछमीपति भ्रम जान न कबहुँ बिनु हरिनाम भजन से॥

–ईश्वर सबके हृदय में बास करते हैं। वे गलत काम करने से रोकते हैं। हम असत की ओर दौड़ते हैं। सत की परख नहीं कर पाते। बाबा जी ने कहा.....

है तो स्वामी सबके भीतर लेकिन लखा न होता है ।
जैसे रंग रहे मेहदी में वैसे मालूम होता है ॥
जैसे मकड़ा जाल जगत में तरह-तरह के छाता है ॥
इन्द्र जाल के अजब तमाशा, पुतली ताल लगाता है ।
है कोई भीतर दूसरा बैठा, नाना नाच नचाता है ॥
जैसे बुद-बुद जल से होता, जल ही माह समाता है ।
'लछमीपति' झूठी यह माया 'ब्रह्म' सत्य मन भाता है ॥

—अपने कर्म का फल मिलता है । जैसा कर्म होगा, वैसा ही फल मिलेगा ।

साध्ते काया कर्म निसानी ।

कर्त्ता देव कारण परमेश्वर, भोगी जीव योनि जग खानी ।
धरणी वारि पवन वायू नभ पंच रचित गुण खानी ।
प्रकृति पुरुष स्वभाव कालवश प्रगट पिंड मनमानी ॥
कोइ गोर कोई कपिल श्याम तन, शीतल यश जग दानी ।
रोगी दीन हीन तन दुर्बल मांगे मिलत न पानी ॥
कोइ पंगु कोइ मूक अंध कोइ श्रवण नासिका हानी ।
मूरख चोर चुगुल कोइ दुर्जन काम क्रोध मद खानी ॥
कोइ कविता वक्ता पढ़ि पंडित वेद शास्त्र विज्ञानी ।
लछमीपति अपनी करनी फल, सुख-दुख पावत प्राणी ॥

—मानव काया पाना कठिन तप है । इसका उपभोग पतन की ओर ले जाता है । मनुष्य वह जो समय के साथ चलता है और समय की गति को परखता है । जीवन का सही उपयोग करता है । बचपन बीता, जवानी गयी, बृद्धावस्था आ गयी, शक्ति क्षीण है । अब हम किसी काम के योग्य नहीं रहे ।

मन पामर हो, नर तन काहे को धरी ।
छन छन काल अकाल बितावत भजता नाहि हरी ॥
बीते खात खेलात वालापन बात बोले तोतरी ।
फिरत नगन तन धूरि लपेटे मातु पिता दुलरी ॥
जालिम जोर युवापन आये, व्याहि लाइ सुन्दरी ।
हरि पद सुधा छाड़ि निशिवासर, पीवत विष गगरी ॥
वृद्ध भये तन कंपन लागे, कफ पीत बात भरी ।
'लछमीपति' पछतात सेज पर, अब हम काह करी ॥

× × ×

मन रे तू कहाँ फिरत बौराना ।
अन ही सीख सिखावन मेरो, चोला भयो पुराना ॥
मानुष जन्म पदारथ पाये, भजसि न क्यों भगवाना ।
अन्त काल आखिर पछतै हैं, यम पुर होत ठिकाना ॥
कियो करार भजन करिबे को सो अब बात भुलाना ।
केश सफेद भयो सब तेरो पहुँचा यम परवाना ॥
नारी नेह देह से छाड़े नैन जोति झपलाना ।
कुल परिवार बात नहि पूछत, कहता वचन कटुलाना ॥
बहुत कमाई असोच भयो है, लै लै धरत खजाना ।
कहत 'लछन' नर राम भजन बिनु माटी मोल विकाना ॥

–सत्संग में सत का साथ होता है, जिसमें जीवन की सार्थकता है । सत्संग में शांति और आनन्द है । सांसारिकता में रहकर भी अध्यात्मिक वातावरण बनाया जा सकता है । परिवार की सुख-शांति हेतु सत्संग आवश्यक है । सत्संग जीवन की कला देता है–जो जीवन यापन के लिये हितकर है । जहाँ सुमति तहाँ सम्पति नाना' सुमति में लक्ष्मी का निवास है । वहाँ दुख भी प्रभु का प्रसाद बन जाता है । बाबाजी कहते हैं–

सत्संगति करु रे मन मोर
चला जात जग जीवन तोर

नाहक असत संग करि खोये । परम परस मणि नर तन रोये ॥
जाके साथ करे जो को ये । मति उपजै तैसो सो होये ॥
काम संग करि क्रोध जमाये । मोह विकार क्रोध ते जाये ॥
मोह पाय तब ज्ञान नसाये । गये ज्ञान नख शिख भ्रम छाये ॥
भ्रम बाढ़े तन बुद्धि विलाये । बुद्धि बिना कोउ न सुख पावे ॥
लछमीपति यह वेद सुनाये । संगति बिना मोक्ष नहिं पाये ॥

–अहंता में सर्वनाश छिपा है । हम जो चाहते हैं वह होता नहीं, वही होता है जो प्रभु चाहते हैं । प्रभु सर्वशक्ति मान हैं ।

अपनी बनाइ बनाइ बनत नहि, जाको राम न देत बनाई
अपने बनावन कारण रावण, सीता लै गई चुराई
आप मरे मरि गये सकल कुल राज विभीषण पाई

अपने वनावन कारण कौरव, द्रोपदी चीर छिनाई
हारि मरे पछताइ बन्धु मिलि, भारत में दुख पाई
अपने वनावन कारण दानव, भस्मासुर वर पाई
जारि गये माथ हाथ निज छूवत, महादेव सुख पाई
अपने वनावन कारण केते, कोटिन कियो उपाई
लछमीपति नहि बने काहु से, झूठे करत बड़ाई

× × ×

तन यह कागज के पुतना, मति कोउ करे गुमाना ।
जैसे नोन गले पानी में, जल बिच बुन्द बिलाना ॥
तैसे विलग जात यह काया, फिर पाछा पछताना ।
बालू के भी त धुआँ के धरहर, पवन लगे उड़िजाना ॥
वैसे पाँच धातु के पिंजरा, प्राण गये विलगाना ॥
राज रंक फकीर मुसाफिर, पंडित काजी मौलाना ॥
हम हम करि हरि नाम भजन बिनु, सबे गये यम खाना ॥
चला जात संसार दिवश निशि कोउ आगे पिछुआना ।
'लछमीपति' चित चेत करो नर, काहे भरम भुलाना ॥

—आना-जाना नियति है । जो आया है—वह जायगा । सुबह-शाम, रात-दिन एवं सूर्य-चाँद-तारे का खेल विदा देने के लिये तैयार है । हमारा जीवन क्षणभंगुर है, जब टिकट कट जाय । भ्रम जाल से मुक्ति केवल प्रभु दिला सकते हैं ।

—परमहंस जी का जीवन-चरित्र बंदनीय है । आपने अध्यात्मिक शक्ति का ज्ञान कराया । सद्पथ पर चलने की सीख दी । भजन-कीर्त्तन के माध्यम से आपने प्रभु सत्ता को बोध कराया । दूसरी ओर अपने निर्मल विचारों से संसार की सही वास्तविकता से जन-जन को अवगत कराया । इनके कार्यक्षेत्र को एक सीमा रेखा में बाँध कर नहीं देख सकते । बाबा मिथिला के ही नहीं सम्पूर्ण भारतीय संस्कार के जीवन प्राण थे । संस्कृति और सभ्यता के रक्षक थे । होली पर इनका भजन वृन्दावन में सुनने का अवसर मिला ।

मुरली धर को रंग डारन दे ।
औसर नहिं पैहों सखि ऐसो, पीताम्बर पट फारन दे ॥

लेहु सधाय बैर सब दिन के, बरवश पगिया बोरन दे ।
जो सूनत दुख होत दिवस निशि, सो मुरली गहि तोड़न दे ॥
धाय धरो मति मान करो कछु नागरि वेश सुधारन दे ।
'लछमीपति' कर जोरि मिनति करु, फगुआ लेकर छाड़न दे ॥

× × ×

ब्रज में मोहन खेलत होरी ।
एक दिश गोप सखा मन मोहन, एक दिश राधा गोरी ॥
श्याम शरीर पीत पद राजित, कर बलिया भुज वांक लसौरी ।
वनमाला कुंडल की शोभा, मोर पच्छ सिर मुकुट धरोरी ॥
कनक गोर तन नील चुन्दरी, भुज बाजु अरु बांक परो री ।
कंचन हार नाक नकबेशर तड़िगण मोती मांग भरोरी ॥
इत तबला उत बाजु पखाबज, ढ़ोलक डम्प करत झक झोरी ।
वीणा वेणु सितार तमौरा, ताल सरंगी झालि झरोरी ॥
अतर गुलाब गागरी भरि, दोउ ओर कुंकुभ मरि पड़ोरी ।
'लछमीपति' होरी सखि सुर वर आइ आइ नर देइ धरोरी ॥

—1979 ई० में आकाशवाणी पटना से 'उत्तरांचल के दिव्य संत परमहंस लक्ष्मीनाथ गोस्वामी' के ऊपर मेरी एक वार्त्ता प्रसारित हुई पन्द्रह मिनट का यह कार्यक्रम था। इस वार्त्ता से प्रभावित होकर वनगाँव निवासी श्री रामकृष्ण दास जी मेरे पास आये। वे वन विभाग से सेवा निवृत्त हुए थे और पटना में ही निवास कर रहे थे। वृद्धावस्था में भी दास जी का गला और स्वर प्रशंसनीय रहा। वे परमहंस जी का भजन बड़े प्रेम से गाते थे। और, आज भी 90 वर्ष की आयु में बाबाजी का भजन बड़े प्रेम से गाते हैं। श्री दासजी ने परमहंस जी की महिमा का बखान इस प्रकार किया—वे वन विभाग के अधिकारी होने के नाते 'वन में ही उनका निवास रहा। बच्चों की शिक्षा-दीक्षा बाबा की ही कृपा से हुई है और सभी बच्चे ज्ञानवान और विद्वान हैं। बाबा की तस्वीर उनकी धरोहर है और पूजन-अर्चन उनकी साधना है। आज भी बाबा की आराधना ही उनका संबल है।

—साधक समाज द्वारा प्रकाशित कामाख्या संदेश में प्रति माह दासजी द्वारा प्रेषित परमंहस जी का भजन प्रकाशित होता रहा है। उनके सभी पुत्र-पुत्रियाँ, बहुएँ एवं दामाद जी बाबा भक्त हैं। 1990 में दिल्ली जाने का मौका मिला।

दासजी के बड़े पुत्र श्री शिवकुमार लाल जी उस समय दिल्ली सेवा में थे। मेरे आगमन का समाचार ज्ञान मेरा एक सत्संग का कार्यक्रम दिल्ली में आयोजित किया। वे मालवीय नगर में रह रहे थे। सत्संग का प्रोग्राम शकरपुरा स्टेट के मालिक के यहाँ था। शिवकुमार जी ने मेरे सम्बन्ध में उनको कहा था। सत्संग से काफी प्रसन्न हुए। शकरपुरा में परमहंस जी की कुटी आज भी विराजमान है और उनके खानदान के सभी लोग बाबा भक्त हैं। बाबा को भोग लगाने के बाद ही परिवार के लोग प्रसाद पाते थे। उनलोगों का कहना है अब भी बाबा की अदृश्य शक्ति का लाभ हमलोग पाते हैं। इनका सम्बन्ध गुजरात से है। गुजराती क्षत्रिय परिवार में बच्चों का विवाह है। इनके सभी सम्बन्धी लोग बाबा को ही मान्यता देते हैं। कहने का तात्पर्य दासजी का परिवार जहाँ हैं वहाँ बाबा के नाम का चिंतन करते हैं।

–परमहंस जी की प्रमुख कुटिया बनगाँव, परसरमा, फटकी लखनौर, शकरपुरा और सिंधिया में है। वैसे, आज भी ऐसा कोई गाँव नहीं जहाँ बाबा का भजन नहीं गाया जाता हो। ग्रामीण लोक संस्कृति में बाबा पूजनीय हैं। बाबा का कृतित्व और व्यक्तित्व प्रातः स्मरणीय है। बाबा की अमृतवाणी का प्रचार-प्रसार करना हमारा दायित्व था। हम इसका निर्वाहन नहीं कर पाये, जितना करना चाहिये। आज बाबा को हमारे बीच आये दो सौ से अधिक वर्ष हो गये। वनगाँव में कोई परिवर्त्तन नहीं हो पाया। कहने को एक कहानी शेष है। ऐसे, महापुरुष जिनका अनुयायी हिन्दू, मुसलमान और अंगरेज हो उनके सम्मान में मूक बने रहे।

◆◆◆

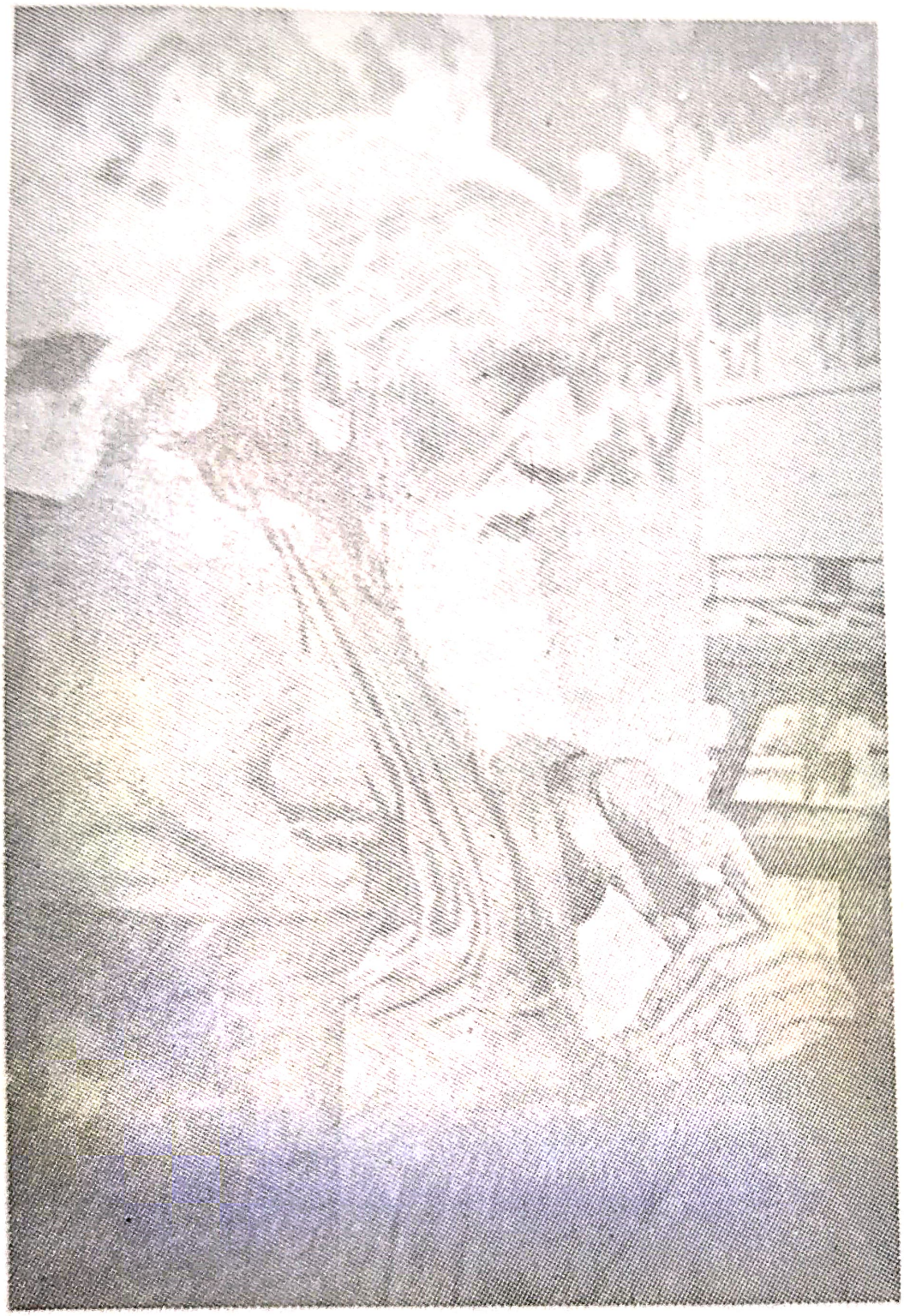

पूज्यपाद महर्षि मँहीं परमहंस जी महाराज

महर्षि मेंही दास जी

धार्मिक कथा सुनने में मेरी रुचि रही है। संत, साधु एवं महात्माओं का दर्शन लाभ मिलता रहा है–'जिन ढूँढ़ा तिन पाईयाँ'–यह जन्मजात श्रद्धा रही है। कई बार अखबार में संत मेंही जी के कार्यक्रमों की जानकारी देखने को मिली। प्रबल इच्छा थी कि एक बार उनका दर्शन-सत्संग मिले। ऐसा सुअवसर सामने आ गया। मैं सियाराम विद्यालय जोगबनी (सिंहेश्वर) में अध्यापक था। संस्थापक सियाराम मंडल जी थे। इनका जीवनयापन भी संत जैसा था। मंडल जी ने कहा कि संत मेंही दास जी कोड़िहार आ रहे हैं और वहाँ अपना अधिक समय नहीं देंगे। जहाँ तक मुझे स्मरण है, वहाँ कृष्णवल्लभ प्रसाद जी का घर था उनके यहाँ विवाह कार्यक्रम था। श्री प्रसाद जी झरिया कोल माइन्स में कार्यरत थे। सियाराम मंडल जी के साथ समय से पहुँचे। कुछ देर बाद गुरुजी का आगमन हुआ। दर्शनार्थियों की भीड़ थी। मंडल जी अपने क्षेत्र के एक हस्ती थे। इसलिये दर्शन सुलभ रहा। बाबा से बातें भी हुई। आर्शीवाद भी लिया। यह मेरी पहली भेंट थी। कृष्णवल्लभ जी से बाबा की एक जीवनी भी मिली। मैं प्रसन्न था। यह 1955 ई० की घटना है।

–दूसरी बार 1966 में कुप्पा घाट, माया गंज भागलपुर में बाबा का दर्शन लाभ मिला। यहाँ मैं बैंक सेवा में 1965 से 1968 तक रहा और इस अवधि में कई रविवार के दिन बाबा के सान्निध्य में आये। उनकी अमृत वाणी सुनने को मिली। यही मेरी मुलाकात संत शिशु सूर्य जी से हुई। पटना आने पर शिशु सूर्य बाबा मेरे निवास पर ठहरते थे और पटना सत्संग में मुझे अवश्य बुलाते थे। पटना (राजेन्द्रनगर) में डा० नन्दलाल जी कुप्पा घाट आश्रम से काफी जुड़े थे और इनके यहाँ यदा-कदा सत्संग का अच्छा प्रबन्ध रहता था। एक दिन शिशु सूर्यबाबा भागलपुर से आये और बोले कि गुरुदेव आपके लिये ये सारी पुस्तकें भेंजे हैं। ये पत्रिका भी है–जो प्रतिमाह आपको प्राप्त होती रहेगी। और, गुरुदेव का आग्रह है–उनके जन्म स्थान का दर्शन करे। पहले से मेरी इच्छा थी कि एक पंथ दो काज–बाबा महाराज की जन्मभूमि और नयानगर भगवती का दर्शन। 1977 में प्रथम बार ऐसे महान संत की पवित्र धरती को नमन किया।

–महिर्ष मेंही दास जी का जन्म स्थान मधेपुरा जिला के खोखास-श्याम मझुआ ग्राम में 28.4.1885 ई० मंगलवार को हुआ था। यह धर्मभूमि उदा किशुनगंज अनुमंडल में स्थित है। यहाँ, इनके नाना जी का निवास स्थल था। महर्षि जी का जन्म ननिहाल में हुआ। इनकी माता जनकवती थी। नाना का नाम विद्यानाथ दास जी जो मझुआ के मूल निवासी थे। पैत्रिक घर मेंही जी का सिकलीगढ़ धरहरा, पूर्णियाँ है। पिता का नाम बबुजन लाल दास जी था। इनके पूर्वज भी मूल ग्राम काझी (बनमनखी) से आकर यहाँ बसे थे। सिकलीगढ़ का पौराणिक इतिहास है। यह भक्त प्रहलाद की भूमि है। यहीं नृसिंह रूप में अवतार लेकर प्रभुजी अपने प्रिय भक्त की रक्षा की। इस प्राचीन गढ़ की खुदाई से अधिक जानकारी मिलती।

एक बार मुझे धीमा स्थित धीमेश्वरनाथ शिव मंदिर जाने का मौका मिला। यह स्थान बनमनखी बाजार के करीब है। मंदिर अति प्राचीन काल से है। शिव लिंग ग्रेनाईट पत्थर का है। एक वाल्टी जल देने पर आप अपना प्रतिबिम्ब देख सकते हैं। साथ में धीमा के मुखिया श्री नवकान्त झा एवं इनके अग्रज पं० छेदी झा जी थे। इनलोगों ने एक आश्चर्यजनक बातें कहीं। इनका कहना था कि प्रत्येक अमावश्या तिथि की अर्द्धरात्रि में एक दिव्य प्रकाश सिकलीगढ़ से निकल कर मंदिर में समा जाता है। दूसरी बात उन्होंने कही कि शिवलिंग में बहुधा सर्प लिपटे रहते हैं। जिस समय मैं पूजा में पहुँचा–वास्तव में कई सर्प लिपटे हुए थे। सिकली गढ़ का क्षेत्रीय दैवीय शक्ति से परिपूर्ण है। मेंही जी के आने से यह भूभाग और गौरवान्वित हुआ है।

–संत आकर नहीं बनते। उनमें जन्मजात संस्कार होता है। पूर्व जन्म के अधुरे कार्यों का पूरा करने के लिये ही वे आते हैं। भारतीय संत परम्परा की अन्तिम कड़ी में उनकी गिनती ली जा सकती है। जहाँ तक मुझे समझने का सुअवसर मिला। मैंने पाया सद् साधक के सारे गुण उनमें भरे थे। उनका हृदय सरल, सरस और विशाल था। मानस पर तेज आँखों में करुणा भरी थी। वाणी में सरसता। जब भी उनके पास गया। सब हाल-चाल पूछ लेते थे। उनका एक मात्र लक्ष्य था–लोगों में साधुता आये। जन-जन का चरित्र निर्माण हो। लोग ईमानदार और नेक बने। सब में अनुशासन रहे।

–मेंही जी ने एक बहुत बड़ा परिवार बनाया। जिस परिवार में सब अपना रहे। सबके दु:ख-सुख में साझा भागीदारी हो। वे स्वयं सद्पथ के पथिक थे और दूसरों को भी इस योग्य बनने का बीज मंत्र दिया। जिसमें अमौध बल है। एक अदृश्य शक्ति है। जहाँ तक स्मरण है, 1966 ई० में संत मत का बहुत बड़ा

अधिवेशन हुआ था। भारतवर्ष के अलावे भी अनेक देशों से संत भक्तों ने आने का सौभाग्य प्राप्त किया था। स्वनामधन्य बाबा की दो बातें आज भी मानस पटल पर अंकित है। सर्वे भवन्तु सखिनः और विश्ववन्धुत्व की सहजता। ये दोनों बातें विश्व को एक कड़ी में बांधती हैं। हम सभी एक प्रभु के अंश हैं। वहाँ विषमता नहीं होगी। सनातन धर्म के मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन और निरूपण महर्षि जी ने किया। उनका जीवन त्याग का दिव्य स्वरूप था। आपने लोगों के दुख-दर्दों को घर-घर जाकर देखा था। उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम--बसे जीवन अछूता नहीं था। अंगरेजी सरकार आपको देखकर सचेत थी। खुफिया एजेन्सी आपके पीछे पड़ गयी थी। बाद में सत्यता सामने आयी। आप पूर्णतया निर्दोष थे। संत की जात नहीं होती। वे प्रभु का प्रसाद ज्ञान बाँटते हैं। सुमार्ग पर चलने की सीख देते हैं। कुमार्ग से बचाते हैं।

संत हृदय बदलते हैं। संतों की वाणी में जो ताकत है वह गोली और बमों में नहीं है। संत जीवन देते हैं। कष्ट नहीं। वे कष्टों का निवारण करते हैं। उनके साथ रिद्धि और सिद्धियाँ चलती हैं। उनकी झोली में अन्नपूर्णा हैं। वे सदा-बहार होते हैं। उनका अशीर्वाद प्राप्त होने पर सभी बाधाएँ स्वतः दूर हो जाती है।

--इस सम्बन्ध में एक सत्यकथा आपके सामने रखने की धृष्टता कर रहा हूँ। आपके एक अनन्य भक्त, ग्राम धबौली जिला सहरसा में है जिनका नाम नरेन्द्र नारायण सिंह जी हैं--आपने महर्षि जी का कार्यक्रम उनकी स्वीकृति से अपने गाँव में ले लिया। आयोजन की तिथि करीब आ गयी। अर्थ जुटाने में कई समस्याएँ सामने आ गयी लेकिन महर्षि जी की अहैतुकी कृपा ने सब आसान कर दिया। अपने शिष्य के मनोरथ को पूर्ण कर दिया। अभूतपूर्व आयोजन, श्रद्धालुओं की अपार भीड़, भोजन सामग्री की कोई कमी ने, अन्नपूर्णा की महती कृपा सर्वत्र शांति और बाबा की जय-जय कार ध्वनि। इस संत मत सम्मेलन का उद्घाटन तत्कालीन जन कार्य मंत्री त्रिवेणीगंज निवासी अनूप लाल यादव जी ने किया था।

श्री नरेन्द्र नारायण सिंह जी के अनुज डा० प्रेमनारायण सिंह जी, विभागाध्यक्ष, रसायन विभाग, ए० एन० कालेज पटना ने कहा कि इतना बड़ा आयोजन संत कृपा से ही संभव हो सका। बाबा भी काफी प्रसन्न मुद्रा में थे। कहीं किसी प्रकार का अवरोध देखने को नहीं मिला। बलायें दूर हो जाती हैं--जहाँ, संत के चरण पड़ते हैं। वह धरती धन्य है--जहाँ संत आते हैं, निवास करते हैं।

उम्र अधिक होने से बाहर का कार्यक्रम स्थगित होने लगा लेकिन सिंहेश्वर के कार्यक्रम को अस्वीकार नहीं कर सके। संत को भी अपनी जन्मभूमि प्रिय

होती है और यही कारण रहा इस धरा-धाम पर आप अन्तिम आये। श्रद्धालुओं एवं दर्शनार्थियों का जनसैलाब आपकी एक झाँकी पाने को आतुर रहे। कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। इतनी उम्र आने पर भी स्मरण शक्ति वैसी ही रही।

–आपने कई पुस्तकों की रचना की जो पठनीय है। परम वंदनीय है। सत्संग योग (चार भाग), संतमत सिद्धान्त, रामचरितमानस सार स्टीक, विनय प्रत्रिका सार सटीक, महर्षि मेंही पदावली, श्री गीता योगप्रकाशादि प्रमुख हैं। इनकी अपनी अनुभूति में–जीवन के सच्चे सन्देश हैं। परमार्थ जीवन है–लोक कल्याण ही जीवन का सही आनन्द है। ऐसे परम विभूति साधक कभी मरते नहीं। उनका नाम अमर होता है। वे तो प्रभु गुणगान का भूखा होते हैं। प्रभु की शरण में रहना ही उनकी प्रार्थना है।

प्रभु तोहि कैसे देखन पाऊँ।
तन इन्द्रिन संग माया देखूँ, मायातीत धरहुँ तुम नाऊँ॥
मेधा मन इन्द्रिन गहे माया, इन्ह में रहि माया लिपटाऊँ।
इन्द्रिन मन अरु बुद्धि परे प्रभु मैं न इन्हें तजि आगे धरऊँ॥
करहु कृपा इन्ह संग छोड़ा बहु, जड़ प्रकृति कर पारहिं जाऊँ।
'मेंही' उस करुणा करि स्वामी, देहु दस सुख पाइ अधाऊँ॥

–जो भक्त सदाचारी हैं। दृढ़ इच्छा शक्ति है। वह भटकता नहीं। उनके लिये संसार में कुछ दुर्लभ नहीं है। पद की गहराई देखें।

नैन सों नैनन देखिये जैसे।
त्वचहिं त्वचा सुख पाइये जैसे॥
आत्म परमात्महिं पेखे तैसे।
आत्म परमात्म मिल सुख तैसे॥
यह दरस परस अति दुर्लभ बात।
बुद्धि परे मन पर की बात॥
ध्यावै अति लौ पावे जोइ।
अरु सदाचार पालै दृढ़ होइ॥
सो 'मेंही' सो दुर्लभ पावें।
नाहिं फिर भव महँ भटका खावे॥

–गुरु के गूढ़ रहस्य का वर्णन असाधारण है। उनकी महानता सागर सदृश है। बुद्धिमान अपने बुद्धियोग से कृपा पाने में समर्थ होते हैं।

मेधा मन संग जेते दरशन,
मेधा मन संग जेते परशन ।
दिव्य दृष्टि से हूँ जो दरशन,
दिव्य अंग का हूँ जो परशन ।
सब मय दर्शन परशन,
प्रभु दरश परश हैं ये नहिं सतजन ।
प्रकृति पार मन बुद्धि के पारा,
जड़ के सब आवरणन पारा ।
गुरु हरि कृपा से आस हो जोई,
'मेंही' दरशन पावे सोई ।

—संसार के लिये जो उपदेश परमहंस जी ने दिया इसका अनुशरण करने से सांसारिक जीवन सुखमय और मधुमय बना रहता है । इसमें कल्याण है ।

सुनिये सकल जगत के वासी, यह जग नश्वर सकल विनाशी ।
यह जग धूम-धाम रे भाई, यह जग जानो छली महाई ।
सबहिं कहा यहि अगमापाई, तुम पकड़ा यहि जानि सहाई ।
मृग तृष्णा जल सम सुख याकी, तुम मृग ललचहुँ देखि एकाकी ।
याते भव दुख सहहु महाई, बिन सतगुरु कहो कौन सहाई ।
यहि सराइ महँ निज नहि काई, सुत पितु मातु नारि किन होई ।
भाई बन्धु कुटुम परिवारा, राज रैयत सकल पसारा ।
सातो स्वर्गहु कर निवासी, दिव्य देव सब अमित विलासी ।
कोइ न स्थिर सबहिं वटोही, सत्य शान्ति एक स्थिर वोही ।
शांति रूप सर्वेश्वर जानो, शब्दातीत कहि संत वखानो ।
क्षर अक्षर के पार हैं येही, सगुण अगुण पर सकल सनेही ।
अलख अगम अरु नाम अनामा, अनिर्वाच्य सब पर सुख धामा ।
ये सब मन पर गुण इनके ही, पड़े महादुख संशय जेही ।
यहि तुम्हरा निज प्रभु रे भाई, जहाँ तहाँ तव सदा सहाई ।
इन्ह को भक्ति करो मन लाई, भक्त भेद सतगुरु से पाई ।
सतगुरु इन्ह में अन्तर नाहीं, अस प्रतीत धरि रहु गुरु पाहीं ।
गुरु सेवा गुरु पूजा करना, अनट वनट कछु मन नहिं धरना ।
अनासक्त जग में रहो भाई, दमन करो इन्द्रिन दुख दाई ।
काम क्रोध मद मोह को त्यागो, तृष्णा तजि गुरु भक्ति में लगो ।

मन कर सकल कपट अभियाना, राग द्वेष अवगुण विधि नाना ।
रस रस तजो तबहिं कल्याणा, धरि गुरु मत तजि मन मत खाना ।
परत्रिय झूठ नशा अरु हिंसा, चोरी लेकर पाँच गरिसा ।
तजो सकल यह तुम्हरो धाती, भव वंधन कर जबर संघाती ।
दारु गाँजा भांग अफीमा, ताड़ी चंडू मदक कोकीना ।
सहित तम्बाकू नशा है जितने, तजन योग्य तज डारो तितने ।
मांस-मछलियाँ भोजन त्यागो, सतगुण खान पान में पागो ।
खान-पान को प्रथम सम्हारो, तब रस रस सब अवगुण मारो ।
नित सत संगति करो बनाई, अन्दर बाहर द्वे विधि भाई ।
धर्म कथा बाहर सत्संगा, अन्तर सत्संग अभंगा ।
नैनन मूदि ध्यान को साधन, करो होइ दृढ़ बैठि सुखासन ।
मानस नाम जाप गुरु केरा, मानस रूप ध्यान उन्हि केरा ।
यह अवलम्ब ध्यान कछु होई, पुनः दृष्टि बल कीजै सोई ।
सुख मन बिन्दु को धरो दृष्टि से, सुरत छुड़ाओं पिंड सृष्टि से ।
धर कर बिन्छु सुनो अनहद ध्वनि, विविध भाँति की होती पुनि-पुनि।
ध्वनि सुनि चढ़ती सूरति जाई, अन्तर पट टूटै दुख दाई ।
छाड़ि पिण्ड तम देश महाई, ज्योति देश ब्रह्माण्ड में जाई ।
ध्वनि धरि या हू पार चढ़ाई, सुरत करे अब सुने अधाई ।
राम नाम धुन सतधुन सारा, सार शब्द जेहि संत पुकारा ।
सो ध्वनि निर्गुण निर्मल चेतन, सुरत गहो तजि चलो अचेतन ।
यहु ध्वनि लीन अवधुनि में होई, निर्गुण पद के आगे सोई ।
मंडल शब्द केर छुटि जाई, अधुन अशब्द में जाई समाई ।
अधुन अशब्द सर्वेश्वर कहिये, शांति स्वरूप याहि को लहिये ।
अस गति होय सो संत कहावै, जीवन मुक्त सो जगहिं चेतावे ।
संत मता कर भेद रे भाई, गाइ गाइ दीन्हा समुझाई ।
जो जाने सो करे अभ्यासा, सत चित करि करै जग में वासा ।
विरति पंथ महँ बढ़े सदाई, सत्संग सो कर प्रीति महाई ।
तोहि बोधे दृढ़ ज्ञान बताई, सब संसय तब देह छोड़ाई ।
ताको मानो गुरु सप्रीती, सेवो ताहि संत की नीती ।
गुरु से कपट कछु नहिं राखो, उनके प्रेम अभिय को चाखे ।
मीठी बोल बोलियो उनसे, अहंकार से सब कुछ बिनसे ।
सो उनसे कभुँ करियो नाहीं, नहिं तो रहियो भव ही मांही ।

–आपने भक्तों को संकेत दिया–समय का सदुपयोग करना चाहिये । समय चुकने पर पछताना ही शेष रहता है । संत की अमृत वाणी को जिसने पीया–उनके पास किसी प्रकार की कमी नहीं रहती ।

समय गया फिरता नहीं, झटहिं करो निज काम,
जो बीता सो बीतिया, अबहु गहो गुरु नाम ।
सन्तमता बिनु गति नहीं, सुनो सकल दे कान,
जो चाहो उद्धार को, बनो संत सन्तान ।
मेंही मेंही भेद यह, सन्तमता कर गाइ,
सबको दियौ दियो सुनाइके, अब तू रहे चुपाई ।

जन्मभूमि का सर्वांगीण विकास हो

–परमहंस जी के जन्म स्थान 'खोखसी श्याम मझुआ' का सर्वांगीण विकास होना चाहिये । इसमें जन-जन का सहयोग अपेक्षित है । गुरु पुर्णिमा का मुख्य आयोजन यहाँ होना चाहिये ताकि उनके अनुयायियों का इस पवित्र भूमि का दर्शनहो सके । गुरु पूर्णिमा महायज्ञ है और इस पुण्यविधि में वे परम्परागत भावना से गुरु में अपनी श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हैं । इसके लिये विस्तृत भूभाग का प्रबन्ध होना चाहिये ।

बिहार के राजनेता तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद जी का शुभागमन इस धरती पर हुआ–उस समय शिशुसूर्य बाबा जीवित थे । लालूजी ने आश्वासन दिया–आश्रम को भव्य बनाया जायगा । हमारा हार्दिक सहयोग होगा ।

–अध्यात्मक का संबल लें हिंसा पर काबू पाया जा सकता है । परमहंस जी का चरित्र हमारे लिये अनुकरणीय है । हमारा भी धर्म है–उन्हें सम्मान दें । उनका आश्रम दर्शनीय होगा युवा पीढ़ियों को प्रेरणा मिलेगी । संतों की पूजा-अर्चना एवं मान-सम्मान में प्राप्ति है । धनार्जन सद्कार्यों के लिये होना चाहिये । बल का प्रयोग दीन-दुखी, निर्बल, असहायों की मदद में हो । परोपकार में कल्याण है । यश और प्रतिष्ठा है । महर्षिजी के जन्म स्थान को भव्य और आकर्षक बनाना–हम सभी का पुनीत कर्त्तव्य है ।

◆◆◆

लेखक-परिचय

बटेश महाराज

अध्यक्ष, अखिल भारतीय साधक समाज
सेवक कामाख्या धाम, असम

1965 से वर्ष में चार बार यथा शारदीय, शिशि
एवं वासंती नवरात्र तथा अम्बुवासी महापर्व 21
जून से 27 जून (ग्रीष्म नवरात्र)

सम्पादक :

कामाख्या सन्देश (मासिक), कामाख्या के सर्वांगीण विकास मे
प्रबल योगदान। कामाख्या तंत्र पर शोध, ज्योतिष तंत्र एवं रमल वेत्ता
एम० ए० (हिन्दी) साहित्याचार्य एवं साहित्य रत्न, तीर्थसेवी, सभी
ज्योतिर्लिंग शिवधाम एवं शक्तिपीठों के दर्शन।

मुख्य कार्य :

धार्मिक प्रवचन एवं सत्संग तीन दशक से अधिक आकाशवाणी
पटना से सम्बद्ध-लोक हित वार्त्ता का प्रसारण दैनिक हिन्दुस्तान एव
'आज' में प्रवचन कालम में प्रवचन प्राय: प्रकाशित।

धार्मिक सलाहकार :

विरुपाक्ष स्वामी टेम्पुल, शंकराचार्य मठ, पम्पासर, हम्पी
कर्नाटक।

अमर कुमार सिंह